प्रकाशन तिथि : 01/12/2024 वर्ष 76 • अंक 5 • जुलाई - नवम्बर 2024 कुल पेज : 24 • मूल्य : ₹ 2

प्रकाशन समाचार

राजकमल प्रकाशन समूह

राजकमल · राधाकृष्ण · लोकभारती · सार्थक (राजकमल प्रकाशन का उपक्रम) · फंडा (राधाकृष्ण का उपक्रम) · हंस प्रकाशन · पूर्वोदय · सारांश · साहित्य भवन प्रयागराज · रेमाधव · अक्षर प्रतियोगी पुस्तकें

1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 ❑ शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800006 ❑ पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211001 मुम्बई : 1, अनमोल सोआराबजी संतुक लेन, धोबी तलाव, मरीन लाइन-400002 ❑ फोन : 23274463, 23288769 ❑ व्हाट्सएप्प नम्बर : +91 9311397733 ❑ info@rajkamalprakashan.com

फ़िलिस्तीन के हालात पर दुनिया की खामोशी इंसानियत की हार है: नासिरा शर्मा

20 जुलाई, 2024 (शनिवार) नई दिल्ली। इजरायल-फिलिस्तीन का विवाद मूल रूप से धार्मिक नहीं बल्कि राजनीतिक मसला है। वर्तमान में फ़िलिस्तीन में बच्चों की इतनी बुरी हालत पर भी दुनिया का खामोश रहना इंसानियत की हार है। ऐसे समय में इस मुद्दे पर एक किताब का आना बेहद सामयिक और जरूरी हस्तक्षेप है। यह बातें शनिवार शाम को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (ऐनेक्सी) में नासिरा शर्मा की किताब 'फ़िलिस्तीन : एक नया कर्बला' के लोकार्पण और परिचर्चा के दौरान वक्ताओं ने कही। इस मौके पर पश्चिमी एशियाई मामलों के विशेषज्ञ प्रो. ए. के. रामाकृष्णन, रक्षा मामलों के विशेषज्ञ-पत्रकार क़मर आग़ा और लेखक नासिरा शर्मा बतौर वक्ता मौजूद रहे। वहीं प्रसिद्ध रंगकर्मी और कवि अशोक तिवारी ने किताब के कुछ चुनिंदा अंशों का पाठ किया। 'फ़िलिस्तीन : एक नया कर्बला' किताब पर बोलते हुए प्रो. ए. के. रामाकृष्णन ने कहा, "इस किताब में लेखक ने ऐतिहासिक और समसामयिक दोनों आधारों पर बहुत ही गहन विचार करके समाधानपरक लेख लिखे हैं। उन्होंने इस किताब के जरिए हमें फिलिस्तीन के वर्तमान हालात पर एक दृष्टिकोण दिया है। यह बेहद सामयिक और जरूरी हस्तक्षेप है। साथ ही यह एक राजनीतिक हस्तक्षेप भी है क्योंकि यह किताब हमें एक्शन के लिए प्रेरित करती है। लेखक ने इस किताब को हमारे सामने लाकर अपने हिस्से का योगदान किया है और हमें भी अपने हिस्से काम करने के लिए प्रेरित किया है।" आगे उन्होंने कहा, "हमारी आज़ादी की लड़ाई के नेताओं ने भी फिलिस्तीन से जुड़ाव दिखाया था क्योंकि जिस समय भारत में बिट्रिश उपनिवेशवाद के विरूद्ध संघर्ष चल रहा था उस समय फिलिस्तीन भी उससे पीड़ित था। मुझे उम्मीद है कि यह किताब एक नई खिड़की खोलेगी। यह किताब सभी के लिए पठनीय है लेकिन विशेष रूप से यह उन युवाओं के लिए उपयोगी है जो इजरायल-फिलिस्तीन के मसले और समझना और उस पर काम करना चाहते हैं।" अगले वक्ता क़मर शेष पृष्ठ 19 पर

आपातकाल की स्थितियों को समझने के लिए इतिहास को जानना जरूरी : ज्ञान प्रकाश

— इतिहासकार ज्ञान प्रकाश की किताब 'आपातकाल आख्यान' का लोकार्पण

— आपातकाल के कारणों के ऐतिहासिक संदर्भ मुहैया कराती है 'आपातकाल आख्यान'

— आपातकाल से हमें जो सीख लेनी चाहिए थी वो हमने नहीं ली : ज्ञान प्रकाश

19 अगस्त, 2024 (सोमवार) नई दिल्ली। सत्तर के दशक में आपातकाल लगाने के पीछे इंदिरा गांधी की सत्ता में बने रहने की चाह एक बड़ा और तात्कालिक कारण था लेकिन और भी ऐसे अनेक कारण थे जिनकी वजह से उन्होंने इस कदम को उठाया। उन कारणों को समझने के लिए हमें इतिहास में और पीछे जाने की जरूरत है। क्योंकि देश में उस आपातकाल की पृष्ठभूमि बहुत पहले से ही तैयार हो रही थी जिस पर पहले हमारा ध्यान नहीं गया। यही बात देश के वर्तमान हालात पर भी लागू होती है। आज जिस तरह की स्थितियां हमारे सामने हैं वे सिर्फ़ कुछ बरसों में नहीं बनी है। दरअसल, इनके लिए इतिहास में पहले घट चुकी अनेक तरह की घटनाएं जिम्मेदार है। यह बातें इतिहासकार और प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ज्ञान प्रकाश ने अपनी किताब 'आपातकाल आख्यान : इंदिरा गांधी और लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा' के लोकार्पण के दौरान कही। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित ज्ञान प्रकाश की किताब का लोकार्पण 18 अगस्त, रविवार को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में हुआ। इस दौरान अशोक कुमार पांडेय और सीमा चिश्ती ने लेखक से किताब पर बातचीत की। वहीं किताब के अनुवादक मिहिर पंड्या ने अनुवाद के अपने अनुभव साझा किए और किताब से कुछ रोचक अंशों का पाठ किया। अनुवादकीय वक्तव्य में मिहिर पंड्या ने कहा कि मुझे आधुनिक इतिहास में बीस और सत्तर के दशक में विशेष रुचि रही है। इसका कारण यह है कि इन दोनों दशकों में अनेक ऐसी घटनाएँ घटित हुई जो कई चीजों को बना रही थी और बदल रही थी। उनमें से कई चीजों को हम आज भी पूरी तरह से व्याख्यायित नहीं कर पाए हैं। दूसरा, उस समय देश के नौजवान बहुत शेष पृष्ठ 19 पर

सामाजिक विभाजन के दौर में 'संगम-संस्कृति के साधक' की याद

— आलोचक मैनेजर पाण्डेय की जयन्ती पर आयोजित हुई 'कृति चर्चा'

— शोध पुस्तक 'दारा शुकोह : संगम संस्कृति का साधक' का हुआ लोकार्पण

24 सितंबर, 2024 (मंगलवार) नई दिल्ली। समाज इन दिनों तरह-तरह की संकीर्णताओं और कट्टरताओं से रूबरू है। इन स्थितियों से निपटने के लिए वैचारिक रोशनी की जरूरत है। दारा शुकोह एक ऐसे ही रोशनख्याल ऐतिहासिक शख्सियत हैं। उन्होंने हिंदुस्तान में मेलजोल पर आधारित संस्कृति को विकसित करने का सपना देखा था। जिसे उन्होंने संगम संस्कृति का नाम दिया। उनके विचार संकीर्णताओं और कट्टरताओं से बाहर निकलकर मेलजोल पर आधारित समाज बनाने में हमारे लिए आज भी सहयोगी हो सकते हैं। सुविख्यात आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने ऐसी शख्सियत के जीवन और विचारों पर किताब लिखकर एक जरूरी काम किया है। यह बातें मैनेजर पाण्डेय की स्मृति में आयोजित 'कृति चर्चा' में वक्ताओं ने कहीं।

यह आयोजन मैनेजर पाण्डेय की जयन्ती के अवसर पर राजकमल प्रकाशन की ओर से गुरुवार शाम इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में किया गया। कार्यक्रम में जेएनयू के फ़ारसी विभाग के प्रोफ़ेसर अख़लाक़ अहमद आहन, कवि-कथाकार-आलोचक अनामिका, इतिहासकार तनुजा कोठियाल, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के प्रोफेसर सरवरुल हुदा और आलोचक-सम्पादक आशुतोष कुमार बतौर वक्ता मौजूद रहे। इस दौरान वक्ताओं ने मैनेजर पाण्डेय की सद्य: प्रकाशित किताब 'दारा शुकोह : संगम-संस्कृति का साधक' के सन्दर्भ में उनके रचनाकर्म और वैचारिक सरोकारों पर चर्चा की। मैनेजर पाण्डेय की सहधर्मिणी चंद्रा सदायत ने इस मौके पर कहा, एक साहित्यकार को सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम आज उनके कृतित्व को इस रूप में याद कर रहे हैं। मुग़ल शहजादे दारा शुकोह पर आधारित यह शोध पुस्तक उनकी एक महत्वाकांक्षी योजना का हिस्सा थी जिस पर वे लगभग तीस वर्षों से काम कर रहे थे। हमारे देश की संगम संस्कृति जो कि आज टूट रही है, विभाजित हो रही है, उसकी इस समय में बहुत जरूरत है और यह किताब उसे पूरा करती है। आशुतोष कुमार ने मैनेजर पाण्डेय को याद करते हुए कहा, साहित्य में सामाजिक-राजनीतिक सरोकार और इतिहास दृष्टि पर जिन लोगों ने जोर दिया और उसके लिए संघर्ष किया उनमें मैनेजर पाण्डेय का नाम उल्लेखनीय हैं। वे अपने जीवन के आखिर तक कल्चरल एक्टिविज्म से जुड़े रहे। उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि साहित्य हमेशा समाज के भीतर ही वजूद रखता है और उसे समाज के सन्दर्भ में ही रचा और पढ़ा जा सकता है। इस किताब में दारा शुकोह एक शहजादा और भावी शासक कम; एक लेखक, कवि, शायर, सूफ़ी दार्शनिक और अध्यात्म की खोज करने वाला व्यक्ति अधिक है। यह किताब हिन्दी में दारा शुकोह के सत्य-शोधक दार्शनिक, सूफ़ी और शायर रूप की व्याख्या करने के कारण महत्वपूर्ण है। इसे हिन्दी में दारा संबंधी बहस के प्रस्थान बिन्दु के रूप में देखा जाना चाहिए। तनुजा कोठियाल ने कहा, अक्सर हम दारा शुकोह को मुगलकाल में एक अपवाद की तरह देखते हैं लेकिन असल में वो कोई अपवाद नहीं है। हम अगर मुगलकाल के इतिहास को देखें तो उसमें एक निरन्तरता दिखती है जिसमें उसी तरह के काम हो रहे थे जो दारा कर रहे थे। वो चाहे अकबर का काल हो या जहाँगीर और शाहजहाँ का काल हो। वह ऐसा काल था जिसमें बहुत से महत्वपूर्ण ग्रंथ रचे जा रहे थे। अलग-अलग भाषाओं के साहित्य और ऐतिहासिक-पौराणिक ग्रंथों का दूसरी भाषाओं में अनुवाद हो रहा था। उन्होंने कहा कि आज के समय में मध्यकाल का इतिहास पढ़ाना भी एक मुश्किल काम है। ऐसे में खोए हुए संदर्भों को सामने लाना बहुत जरूरी है और उसके लिए यह एक बहुत जरूरी किताब है। सरवरुल हुदा ने मैनेजर पाण्डेय के व्यक्तित्व को याद करते हुए कहा कि मैंने बहुत लोगों को देखा है लेकिन इतना सोचनेवाला इनसान दूसरा नहीं देखा। वो जीवन के आखिरी दिनों तक एक विद्यार्थी की तरह जिज्ञासु बने रहे। एक पाठक और एक शिक्षक के रूप में मैंने उनको जैसा देखा कि उनमें गुंजाइशें बहुत होती थीं। दारा शुकोह पर शोध करते हुए उन्होंने दारा को अपने वजूद का हिस्सा बना लिया। हम गौर करें तो इस किताब में वो सियासत नहीं है जिसे हम अक्सर उस कालखंड के लिए देखते हैं। उन्होंने कहा, दारा शुकोह ने जो काम किए वो इतने लंबे समय में कई अलग-अलग तर्जुमों से गुजरते हुए हम तक उसी रूप में नहीं पहुँच पाए जैसे वो असल में थे। वो उसकी व्याख्या करनेवालों की विचारधाराओं से प्रभावित होते रहे। लेकिन सबसे जरूरी बात यही है कि दारा शुकोह का मिजाज ऐसा था जो चीजों को समग्रता में देख सकता था। अख़लाक़ अहमद आहन ने भारतीय साझा संस्कृति की परंपरा को रेखांकित करते हुए कहा, दारा शुकोह ने संगम संस्कृति के लिए जो काम किए वो उल्लेखनीय है लेकिन दारा वो पहला व्यक्ति नहीं था जिसने ये काम किए और न ही अकबर ये काम करनेवाला पहला व्यक्ति था। यह हमारी बहुत पुरानी परंपरा रही है। हमारी भारतीय संस्कृति में जो ज्ञान परंपरा रही है उसमें कभी भी चीजों को व्यक्ति की पहचान से जोड़कर नहीं देखा जाता था। मजहबी पहचान को राजनीति से जोड़कर देखना औपनिवेशिक काल की देन है। हमारी आज़ादी की लड़ाई में कितने ही लोग थे जो पक्के मजहबी थे लेकिन उनमें आपस में कोई बैरभाव नहीं था। मजहबी होना कोई खराबी नहीं है। समस्या तब आती है जब हम मजहब को पहचान की राजनीति से जोड़कर देखते हैं। उन्होंने कहा, दारा शुकोह बुनियादी तौर पर एक सच्चा दार्शनिक है जिसकी अपनी एक तलाश है। एक सूफ़ी दार्शनिक के तौर पर वो मजहबों को समझने की कोशिश करता है। पश्चिम के दार्शनिकों की भारतीय चिन्तन परंपरा में दिलचस्पी पैदा करने का श्रेय भी दारा शुकोह को जाता है। दारा पर इस शोध के जरिए मैनेजर पांडेय ने एक तरफ हिन्दी और उर्दू के बीच और दूसरी तरफ साहित्य और विभिन्न समाज विज्ञानों के बीच जो पुल बनाए, वे दूर तक उनकी प्रिय संगम संस्कृति को मजबूत बनाने का काम करते रहेंगे। अनामिका ने धर्म और मार्क्सवाद के बीच नए रचनात्मक संवाद की संभावना की ओर इशारा किया। उन्होंने कहा कि दारा शुकोह जिस संगम संस्कृति का साधक था उसका यह साझापन कैसे बचाया जाए यह हम सबकी साझी चिन्ता है। यह किताब भी उसी वाजिब चिन्ता से निकली है।

लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता मिलने पर राजकमल प्रकाशन समूह की ओर से हार्दिक बधाई

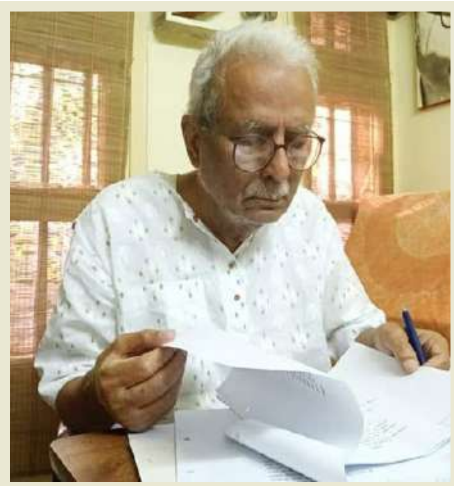

राजीव भार्गव की किताब राष्ट्र और नैतिकता का लोकार्पण

— मूल्यों के बिना हम जी नहीं सकते : राजीव भार्गव
— 'सवाल' आज का सबसे जरूरी शब्द है : गोपालकृष्ण गांधी
— असहमत होने पर अलग विचार वालों से संवाद का चलन अब नहीं रहा : अभिषेक श्रीवास्तव
— आज हमारा लोकतंत्र बहुत बीमार है : रूपरेखा वर्मा

04 अक्टूबर, 2024 (शुक्रवार) नई दिल्ली। हम आजकल इतनी जल्दी में है कि तुरन्त सबकुछ हासिल कर लेना चाहते हैं। इस जल्दबाजी में हम अपने मूल्यों और नैतिकता को भुला रहे हैं। हमारी सभ्यता की हजारों वर्षों की यात्रा से हमने जिन मूल्यों को हासिल किया है, वे आज खंडित हो रहे हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मूल्यों के बिना हम जी नहीं सकते। आज हम अपने में ही इतने सिमट रहे हैं कि विपरीत विचारों वाले व्यक्ति से बात तक नहीं करना चाहते। इस तरह के एक बंटे हुए समाज में नीति और नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में, हमारा रोजमर्रा का व्यवहार और विचार क्या हो, इस पर राजीव भार्गव ने अपनी किताब में बहुत शिद्दत से बात की है। इस किताब में हमारे समय के बहुत जरूरी सवालों को उठाया गया है। यह किताब हिन्दुस्तान के ईमान के बारे में है, उसकी आत्मा के बारे में है। ये बातें राजनीतिक सिद्धान्तकार प्रोफ़ेसर राजीव भार्गव की किताब 'राष्ट्र और नैतिकता : नए भारत से उठते 100 सवाल' के लोकार्पण कार्यक्रम में वक्ताओं ने कही। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित इस किताब का लोकार्पण गुरुवार शाम इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में हुआ। कार्यक्रम में लेखक-राजनयिक गोपालकृष्ण गाँधी, विचारक और सामाजिक कार्यकर्ता रूपरेखा वर्मा, इतिहासकार एस. इरफ़ान हबीब, सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता संजय हेगड़े, लेखक राजीव भार्गव और अनुवादक अभिषेक श्रीवास्तव बतौर वक्ता मौजूद रहे। इस मौके पर गोपालकृष्ण गांधी ने कहा, 'सवाल' आज का सबसे जरूरी शब्द है। जवाब जरूरी नहीं, पर सवाल उठाना जरूरी है। यह किताब सवालों पर ही टिकी हुई है। जीना है या मरना है, तय करना है। इस किताब का सवाल यही है। हमें यह पहचान करने की जरूरत है कि किन-किन चीजों में आज सांस नहीं है। आज के समय में 'ईमान' बहुत खतरे में है। हमें यह भी तय करना है कि ईमान को बचाना है कि नहीं। यह किताब हिन्दुस्तान के ईमान के बारे में है, उसकी आत्मा के बारे में है। यह किताब एक ऐसे व्यक्ति की कलम से निकली है जो एक बुद्धिजीवी है विचारक है और नागरिकता पर विश्वास रखने वाला हिन्दुस्तानी है। यदि आज हम इस किताब को पढ़ें तो इस ख़याल से कि हमें हिन्दुस्तान के ईमान को जिन्दा रखना है। प्रोफेसर एस. इरफ़ान हबीब ने कहा, आज हम बहुत जल्दी सबकुछ हासिल कर लेना चाहते हैं। इस जल्दबाजी में हम मूल्यों की परवाह नहीं करते। हम नैतिकता को भुला रहे हैं। उन्होंने कहा, राजीव भार्गव ने अपनी किताब में हमारे समय के बहुत जरूरी सवालों को उठाया है और बड़ी खूबसूरती से उनके जवाब भी दिए गए हैं। यह किताब हमें एक उम्मीद दिखाकर खत्म होती है कि यह समय भी बदलेगा। यह भरोसा करना बहुत जरूरी है कि आज हम जहाँ है उससे एक दिन जरूर बाहर निकलेंगे। रूपरेखा वर्मा ने कहा, यह किताब ऐसे समय में आई है जब हमारा संविधान और लोकतंत्र ही नहीं बल्कि जीवन और समाज का हर पहलू संकट में है। आज हर चीज पर दोबारा विचार की जरूरत पड़ रही है। पिछले कुछ सालों से मैं खोज रही हूँ कि हमारा देश कहाँ है। हालांकि वो वैसा तब भी नहीं था जैसा हम उसे बनाना चाहते थे लेकिन उस समय उसके वैसा बनने की एक उम्मीद दिखती थी, अब वो भी नहीं रही। उन्होंने कहा, हमारा लोकतंत्र आज बहुत बीमार है। इस वक्त में सबसे अहम सवाल यह है कि हम अपने लोकतंत्र और पारस्परिकता की समझ को कैसे अमल में लाएं। यह किताब एक दिशा देती है कि हमें किस नज़रिए से इस समय को देखना चाहिए। मेरे विचार से हमारे जीवन और समाज का ऐसा कोई पहलू नहीं बचा है जिस पर यह किताब नैतिकता की दृष्टि से विचार न करती हो। इस समय के लिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण और सामयिक किताब है। संजय हेगड़े ने कहा, संविधान वह नहीं है जो वकीलों और जजों के बीच कोर्ट की बहसों तक सीमित होता है। संविधान एक नागरिक का दूसरे नागरिक के साथ समझौता है। संविधान वह है जिसकी बुनियाद पर एक नागरिक दूसरे नागरिक को यह भरोसा दिलाए कि जो हमारा हक है, वह तुम्हारा भी हक है। यही संवैधानिक नैतिकता है जो हमारे संविधान को एक सूत्र में बांधती है और उसे ही राजीव भार्गव ने अपनी किताब में लिखा है। उन्होंने कहा, राजीव भार्गव ने अपनी किताब में जिन विषयों पर टिप्पणियाँ कीं हैं वो आगे ऐसे और जरूरी कामों के लिए एक भूमिका का काम करेंगी। मैं यह आशा करता हूँ कि ज्यादा से ज्यादा लोग इसे पढ़ें और संवैधानिक नैतिकता को आगे बढ़ाएँ। अभिषेक श्रीवास्तव ने कहा, हमारे यहाँ के प्रचलित विमर्श में राजनीति, विचारधारा, संस्कृति और इतिहास पर बात होती है, लेकिन नैतिकता पर बात नहीं होती। पूरे समाज में इस बात को लेकर एक तरह से सहमति दिखाई पड़ती है कि क्या अच्छा है, क्या बुरा है, क्या सही है और क्या गलत है। इसकी वजह से हमारे समाज में पिछले कुछ वर्षों में एक अजीब तरह का ध्रुवीकरण पैदा हो गया है। इसके चलते आज स्थिति यहाँ तक आ पहुँची है कि हमारी जिससे असहमति होती है, उनसे हम संवाद तक नहीं करते। हम अपने जैसे लोगों को खोजते हैं, जो हमारे जैसा सोचते हैं। हमारा समाज लगातार अलग-अलग पालों में बंटता जा रहा है। एक बंटे हुए, ध्रुवीकृत समाज में, नीति और नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में, हमारा रोजमर्रा का व्यवहार और विचार क्या हो, चीजों को देखने का नज़रिया क्या और कैसा हो, इस पर प्रो. राजीव भार्गव ने अपनी इस किताब में बहुत शिद्दत से बात की है। किताब के लेखक राजीव भार्गव ने अपनी बात रखते हुए कहा, हमारी हजारों वर्षों की सभ्यता ने जो मूल्य अर्जित किए, वो आज खंडित हो रहे हैं। वो मूल्य बड़े संकट में है, वो जिएंगे कि मरेंगे इस बात का खतरा है। इसका निर्णय हमें एक सामूहिक समझ से करना है। इसी निर्णय से हम राष्ट्र की आत्मा और सभ्यता को बचा पाएंगे। मूल्यों के बिना हम जी नहीं सकते। यदि हम मूल्यों से खुद को अलग करते हैं तो फिर हम मनुष्य ही नहीं रह पाते। इस किताब में मैंने 'राष्ट्र' शब्द पर जोर देकर इसे बार-बार इसलिए इस्तेमाल किया है क्योंकि मेरा मानना है कि राष्ट्र के बारे में बात नहीं करके हमने उसे कहीं दूसरी तरफ धकेल दिया है। हमें उसे रिक्लेम करने की जरूरत है। मेरी प्रेरणा यही थी कि मैं इस किताब के जरिए लोगों से बात कर सकूँ, उनसे जुड़ सकूँ। मुझे जिस तरह की प्रतिक्रियाएँ मिल रही हैं तो लगता है कि मैं इस मकसद में कुछ कामयाब हुआ हूँ।

हिन्दी आलोचना की जीवन्त बहसों के केन्द्र थे रामविलास शर्मा

— रामविलास शर्मा रचनावली के दूसरे भाग 'भाषा और भाषाविज्ञान' का हुआ लोकार्पण

— रामविलास शर्मा की जयन्ती पर राजकमल प्रकाशन ने आयोजित किया कार्यक्रम

11 अक्टूबर, 2024 (शुक्रवार) नई दिल्ली। रामविलास शर्मा ने जातीयता के प्रश्न पर किसी राजनीतिज्ञ से भी अधिक गहराई से चिन्तन और लेखन किया। हिन्दी आलोचना के मौजूदा ढांचे को बनाने में उनकी भूमिका रामचंद्र शुक्ल जैसी ही है। उनका सादगीपूर्ण और अनुशासित जीवन आज के लेखकों और आलोचकों के लिए एक मिसाल है। ये बातें रामविलास शर्मा की जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने कही। प्रतिष्ठित आलोचक रामविलास शर्मा की 112वीं जयन्ती पर उनकी स्मृति में राजकमल प्रकाशन की ओर से गुरुवार शाम कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर पाँच खण्डों में प्रकाशित उनकी रचनावली के दूसरे भाग 'भाषा और भाषाविज्ञान' का लोकार्पण हुआ। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर-एनेक्सी में आयोजित इस कार्यक्रम में लेखक-आलोचक वीर भारत तलवार, नारीवादी चिन्तक-आलोचक गरिमा श्रीवास्तव और आलोचक कवितेन्द्र इन्दु बतौर वक्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन कवि-आलोचक मृत्युंजय ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए मृत्युंजय ने कहा, रामविलास शर्मा हिन्दी आलोचना की जीवन्त बहसों के केन्द्र थे। उनका मकसद हिन्दी समाज, हिन्दी कौम और हिन्दी नवजागरण जैसे मुद्दों पर सही समझ बनाना था। जातीय समस्या पर सर्वाधिक लिखा वीर भारत तलवार ने रामविलास शर्मा के साथ अपने निजी संबंधों को याद किया। उन्होंने कहा, आलोचना में जैसी नैतिक दृढ़ता और उच्चता रामविलास जी में थी वैसी किसी और में नहीं मिलती। जातीयता के प्रश्न पर विचार करना मैंने भी उन्हीं से सीखा। उन्होंने जातीयता और जातीय समस्या पर जितना चिन्तन और लेखन किया उतना किसी और ने नहीं किया। जातीय समस्या राजनीति से जुड़ा विषय होने के बावजूद इस पर किसी राजनीतिक व्यक्ति से अधिक विचार रामविलास जी ने किया।

सादगी और अनुशासन की मिसाल गरिमा श्रीवास्तव ने अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान जेएनयू में रामविलास शर्मा के अध्यापन को याद करते हुए कहा, वे बहुत सादगी से रहते थे और बेहद अनुशासित जीवन जीते थे। उन्हें देखकर लगता था कि हमें भी इसी तरह का अनुशासित जीवन जीना चाहिए। इतना सादगीपूर्ण जीवन जीते हुए उन्होंने जो विपुल लेखन किया, वह आज के लेखकों और आलोचकों के लिए एक मिसाल है। इसके बाद उन्होंने 'रामविलास शर्मा का भाषा चिन्तन' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया। स्पष्ट सरोकारों वाले आलोचक कवितेन्द्र इन्दु ने रामविलास शर्मा के लेखन और चिन्तन पर आलोचनात्मक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा, हिन्दी आलोचना के मौजूदा ढांचे को निर्मित करने में जैसी भूमिका रामचंद्र शुक्ल की है, वैसी ही रामविलास शर्मा की है। उन्होंने रचना और रचनाकार के बीच अंतराल को मिटा दिया। रामविलास जी ने एक लंबा लेखकीय जीवन जिया और उम्रभर उसमें बदलाव भी लाते रहे। वे बदलाव कई बार पूरी तरह से विपरीत भी होते थे। उन्होंने कहा कि रामविलास शर्मा के सरोकार स्पष्ट थे और वे लगन के एकदम पक्के थे। वे जिस विषय पर काम करना शुरु करते तो फिर उसकी पूरी गहराई तक जाते थे। उसे वे बीच में छोड़ते नहीं थे। साहित्य-जगत में विराट उपस्थिति राजकमल प्रकाशन के प्रबन्ध निदेशक अशोक महेश्वरी ने रामविलास शर्मा को याद करते हुए कहा, अस्सी के दशक में रामविलास शर्मा जी की ऐसी विराट उपस्थिति थी कि उनसे मिलने जाने की बात सोचना भी आसान नहीं था। लेकिन मैं जब उनसे मिलने गया तो वे बहुत सहजता से मिले। उनसे प्रकाशन के लिए किताब माँगी तो उस समय तो नहीं पर कुछ समय बाद उनका एक पत्र आया और उन्होंने किताब दी। फिर उनकी किताबें आती रहीं। मैं आज प्रकाशन जगत में जो कुछ भी हूँ, वह रामविलास जी जैसे महापुरुषों की ही देन है। इसके बाद उन्होंने 'रामविलास शर्मा रचनावली' के प्रकाशन की योजना साझा की। उन्होंने कहा, हिन्दी साहित्यालोचना में रामविलास शर्मा का योगदान अद्वितीय है। उनकी सम्पूर्ण रचनाओं को 'रामविलास शर्मा रचनावली' के रूप में 50 खण्डों में प्रकाशित करने की योजना पर राजकमल प्रकाशन काम कर रहा है। रचनावली का पहला भाग 'आलोचना समग्र' 18 खण्डों में पहले प्रकाशित हो चुका है। दूसरा भाग 'भाषा और भाषाविज्ञान' पाँच खण्डों में आज लोकार्पित किया जा रहा है। तीसरे भाग में 'इतिहास और राजनीति' संबंधी उनके लेखन को संकलित कर शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा।

काल संवाहक है नंद बाबू की कविता : नंदकिशोर आचार्य

चार खंडों में नंद चतुर्वेदी रचनावली का लोकार्पण

उदयपुर 4 अगस्त। नन्द बाबू आधुनिक कविता के पुरोधा थे, वे समाजवादी कार्यकर्ता थे, किंतु उनकी कविता राजनीतिक एजेंडे के बजाए समय और परिस्थितियों के मर्म का उद्घाटन करती हैं। कविता उनके लिए मानवानुभूति वाले आत्मानुभूति का विषय था। उक्त विचार साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा नन्द चतुर्वेदी फाउंडेशन उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में नंद चतुर्वेदी जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात साहित्यकार नंद किशोर आचार्य ने व्यक्त किए। आचार्य ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि लोकार्पण कार्यक्रम में मुझे नंद बाबू को याद करने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि कविता अपने आप में ज्ञान की प्रक्रिया है, कविता पूर्व निर्धारित सत्य का आँकलन नहीं है, कविता काल संवाहक होती है, काल बाधित नहीं होती, नन्द बाबू की कविता भी काल बाधित नहीं है। नंद बाबू की कविता को स्थूल सन्दर्भ से परे बताते हुए आचार्य ने कहा कि लेखकीय स्वाधीनता और गरिमा नंद बाबू में देखने को मिलती है। उनके अनुसार कविता की संख्या कवि को बड़ा नहीं बनाती, बल्कि कविता का मर्म कवि को बड़ा बनाता है; नंद बाबू भी इसी अर्थ में राष्ट्रीय कवि हैं। आचार्य ने आग्रह किया कि नंद चतुर्वेदी को क्षेत्र विशेष नहीं वरन सम्पूर्ण भारतीय कविता के परिप्रेक्ष्य

में देखा जाना चाहिए। इससे पूर्व आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. माधव हाड़ा ने कहा कि नंद चतुर्वेदी ने स्वयं को कभी खूंटे से नहीं बाँधा, भले ही उनको समाजवादी कवि कहा गया किन्तु हमेशा उनका कवि आगे रहा, राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं। वे जीवन के अभाव की कविता में राग की कविता के कवि हैं। उनकी कविता में कृष्ण, अर्जुन, महाभारत के चरित्र हैं तो पद्मिनी, भगवान् बुद्ध भी नज़र आते हैं।

नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं राजनीति शास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते उन्हें साहित्यकार के रूप में बारीकी से नहीं देख पाता हूँ, उन्होंने उनकी कविता के उदाहरण देकर बताया कि राज्य से उम्मीद उनकी कविता में है, वे समझ के साथ समय की चेतना को परिभाषित करते हैं। कार्यक्रम के उदघाटन सत्र में स्वागत उद्बोधन अजय शर्मा सहायक संपादक, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने दिया। वहीं, नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन के सचिव अनुराग चतुर्वेदी ने अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया। उद्घाटन सत्र में ही आलोचक डा. पल्लव द्वारा चार खंडों में संपादित और राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित नंद चतुर्वेदी रचनावली का लोकार्पण किया गया। पल्लव ने इसे स्मरणीय पल बताते हुए कहा कि नंद बाबू जैसे कवि के रचना संसार की यात्रा दुर्लभ अनुभव है। परिसंवाद के प्रथम सत्र में नंद चतुर्वेदी के काव्य के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए आलोचक प्रो शंभु गुप्त ने कहा कि नन्द बाबू मे आत्म निरीक्षण, आत्म संशोधन की भावना है और वे आत्मसजग भी हैं। नन्द बाबू की कविताओं में रूपक का प्रयोग है जिसमें महाभारत प्रमुख है। उन्होंने कहा कि हमें अपने रूपकों मिथकों की पुनर्व्याख्या करनी चाहिए। 'आशा बलवती है राजन' काव्य संकलन में महाराज और महारानी इसी तरह के प्रयोग हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो देवेंद्र चौबे ने कहा कि समय,राजनीति,दर्शन इत्यादि के सूत्र नंद चतुर्वेदी की कविताओं को महत्त्वपूर्ण बनाते हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से आईं रेणु व्यास ने कहा कि नंद बाबू ने अपने को अस्थिर और अधीर समय का कवि कहा है। नंद बाबू की कविताओं में उनका समय केंद्र में है और उन्होंने अपनी कविता में समृद्धि पक्ष नहीं अभाव पक्ष चुना है। उनकी कविता में विविधतापूर्ण मानवीय संवेदना का सूक्ष्म अंकन है। नंद बाबू दो शताब्दियों के कवि रहे हैं अत: दो शताब्दियां उनकी कविताओं में दृष्टिगोचर होती है। सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रसिद्ध कवि हेमंत शेष ने कहा कि कुछ लेखकों का साहित्य जलने वाले धूप की तरह होता है। नंद बाबू का साहित्य भी ऐसा ही है जो धीमे-धीमे जलता है लेकिन खुशबू देर तक देता रहता है।

द्वितीय सत्र में नंद चतुर्वेदी के गद्य लेखन के महत्त्व पर आलोचक डॉ पल्लव ने नन्द बाबू के संस्मरणात्मक और वैचारिक गद्य पर विस्तृत टिप्पणी की। अतीत राग पुस्तक पर उन्होंने कहा कि नन्द बाबू ने ऐसे भुला दिए गए लोगों के बारे में भी लिखा है जिन्होंने साहित्य और समाज में बड़ा योगदान दिया। उन्होंने कहा कि आलोचना नन्द बाबू के लिए आपद धर्म नहीं थी बल्कि कविता लिखने के साथ काव्य चिंतन भी उन्हें आवश्यक लगता था। शब्द संसार की यायावारी में उन्होंने साहित्य के बुनियादी सरोकारों के साथ शब्द व कर्म के द्वैत पर भी लिखा। कवि ब्रजरतन जोशी ने सत्र में कहा कि नन्द बाबू का गद्य बहु ध्वन्यार्थी गद्य है। गद्य व काव्य दोनों में बिम्बात्मकता में अंतर है, काव्य में बिम्ब के लिए स्थान होता है लेकिन गद्य में इसके लिए अनुभव की प्रामाणिकता अवश्यक है, नन्द बाबू के गद्य पर यह व्याख्या बहुत सटीक है। सत्र के तीसरे वक्ता प्रो. मलय पानेरी ने कहा कि नन्द बाबू का साहित्य सामाजिक रचना का उद्यम करता है, उनका साहित्य हमारी चिंतन विधा को भी उद्वेलित करता है। सत्र की अध्यक्षता कर रहे हिंदी और मराठी के प्रसिद्ध साहित्यकार दामोदर खड़से ने कहा कि नन्द बाबू की कविता से पाठक आसानी से जुड़ जाता है। जो दिखता नहीं उसे जो दिखा दे वो कालजयी रचना होती है इस लिहाज़ से नन्द बाबू का काव्य कालजयी है। तीनों सत्रों का संयोजन डा. कीर्ति चुंडावत ने किया। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में स्थित बप्पा रावल सभागार में शहर के लेखक, संस्कृति कर्मी और पाठक उपस्थित थे।

—डॉ कीर्ति चुंडावत, उदयपुर

भारतीय समाज को समझने के लिए 'गोदान' और 'मैला आंचल' की अगली कड़ी है 'अगम बहै दरियाव' : प्रो रविभूषण लखनऊ

शिवमूर्ति में कुछ प्रेमचंद भी हैं और कुछ रेणु भी। उनका उपन्यास 'अगम बहै दरियाव' कृषक जीवन, ग्रामीण समाज और इसके जरिये पूरे भारतीय समाज को समझने के लिए ' गोदान ' और ' मैला आंचल ' की अगली कड़ी है। यह बात प्रख्यात आलोचक प्रो. रविभूषण ने 'अगम बहै दरियाव 'पर जन संस्कृति मंच द्वारा सात जुलाई को लखनऊ के कैफी आजमी एकेडमी सभागार में आयोजित परिचर्चा-संगोष्ठी में अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कही। उन्होंने कहा कि 'अगम बहै दरियाव ' इतना कुछ समेटे हुए है कि आलोचकों और सजग पाठकों से भी बहुत कुछ छूट जाए। 22 अध्याय और 585 पन्नों वाला यह उपन्यास कमजोर के पक्ष में और जाति, धर्म, वर्ण व्यवस्था, अन्याय के विरुद्ध है। यह साहित्य के पाठकों के लिए जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही समाजशास्त्रियों, राजनीतिविदों और न्यायपालिका से जुड़े लोगों के लिए भी। इस उपन्यास को दलित विमर्श, स्त्री विमर्श जैसे किसी विमर्श में नहीं बांधा जा सकता। यह समय के विमर्श के दायरे में जाता है। उन्होंने कहा कि शिवमूर्ति ने जिस गहराई से जाति व धर्म को देखा है, वह अद्‌भुत है। उन्होंने दिखाया है कि जाति-धर्म का जाल कैसे मानवता विरोधी है, संविधान विरोधी है। इस उपन्यास को समझने के लिए हमें बार-बार इससे बाहर निकलना पड़ता है, जिसके लिए यह कई कपाट खोलता है। उन्होंने कहा, 'अगम बहै दरियाव ' स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के पक्ष में लिखा गया है। यह 'तंत्र' को हटाकर 'लोक' को प्रतिष्ठित करता है। प्रो रविभूषण ने कहा कि उपन्यास की विशेषता यह भी है कि इसमें 200 से अधिक पात्र हैं जिनमें 15 से अधिक पात्र याद रखने वाले हैं। उन्होंने उपन्यास में नौटंकी, लोक गीतों, सांस्कृतिक रस्मों के समावेश पर भी विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे गोरखपुर विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर युवा आलोचक डॉ राम नरेश राम ने उपन्यास का परिचय कराते हुए कहा कि यह वंचित तबके के न्याय बोध और न्याय के लिए उसके संघर्ष की गाथा है। उन्होंने कहा कि 'साहित्य में उपेक्षित वर्ग की भाषा' बनाम 'स्थापित वर्ग की भाषा' के सम्बंध में उपन्यास भाषा का नया क्रिटिक पेश करता है। चार दशक की कथा भूमि में मज़दूर, किसान, उपेक्षित स्त्री के जीवन की पहचान की अनेक धाराओं को पेश करते हुए वह सब बयान हुआ है जो स्पष्ट रूप से आज हमको राजनीति, सामाजिकी, न्यायनीति इत्यादि में दिखायी दे रहा है। किसानों की आत्महत्या, लिंचिंग, आनर किलिंग, कोर्ट-कचहरी, पुलिसिया छल, सामन्तवाद के उभार और उसके क्षरण, लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं और संस्थाओं का 'ग़रीब का दुश्मन' होने की प्रक्रिया पर यह उपन्यास एक सार्थक हस्तक्षेप है।

पहले वक्ता के रूप में अधिवक्ता हरिंद्र प्रसाद ने कहा कि कानून और न्यायिक प्रक्रियाओं को लेकर शिवमूर्ति की गहरी समझ चौंकाती है। इस मामले में वह वकीलों को भी शेष पृष्ठ 15 पर

निर्मल वर्मा की पुस्तकें

असंकलित कहानियों का संग्रह

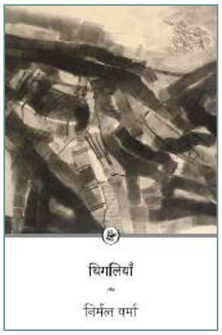

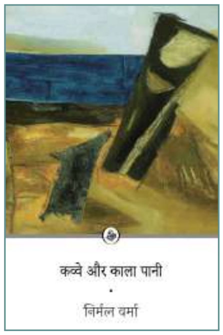

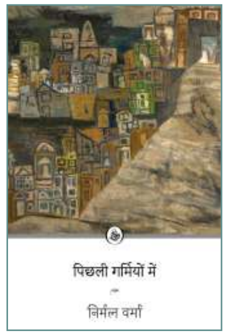

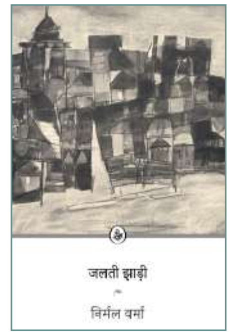

थिगलियाँ
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

परिन्दे
निर्मल वर्मा
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 695 | HB

कव्वे और काला पानी
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

पिछली गर्मियों में
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

बीच बहस में
निर्मल वर्मा
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 595 | HB

जलती झाड़ी
निर्मल वर्मा
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 595 | HB

कहानी संग्रह

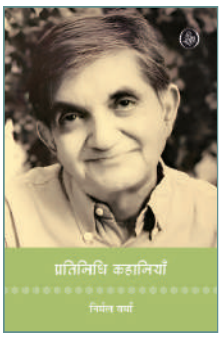

सूखा तथा अन्य कहानियाँ
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 895 | HB

सूखा तथा अन्य कहानियाँ
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 895 | HB

कथेतर

धुंध से उठती धुन
निर्मल वर्मा
मूल्य : 399 | PB
मूल्य : 895 | HB

संचयन

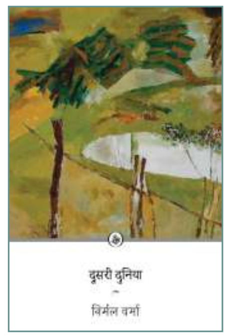

दूसरी दुनिया
निर्मल वर्मा
मूल्य : 599 | PB
मूल्य : 1395 | HB

विचार-चिन्तन

दूसरे शब्दों में
निर्मल वर्मा
मूल्य : 399 | PB
मूल्य : 995 | HB

उपन्यास

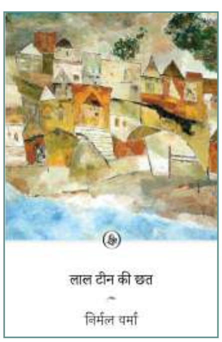

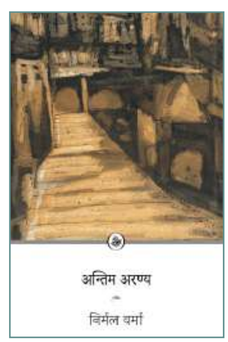

रात का रिपोर्टर
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 695 | HB

लाल टीन का छत
निर्मल वर्मा
मूल्य : 350 | PB
मूल्य : 895 | HB

एक चिथड़ा सुख
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

अन्तिम अरण्य
निर्मल वर्मा
मूल्य : 350 | PB
मूल्य : 895 | HB

वे दिन
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 895 | HB

निर्मल वर्मा की पुस्तकें

नई आमद

निबंध

ढलान से उतरते हुए
निर्मल वर्मा
मूल्य : 350 । PB
मूल्य : 895 । HB

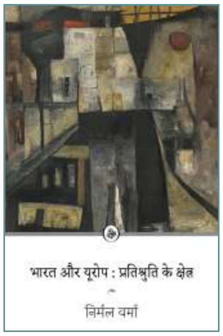

भारत और यूरोप
प्रतिश्रुति के क्षेत्र
निर्मल वर्मा
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 695 | HB

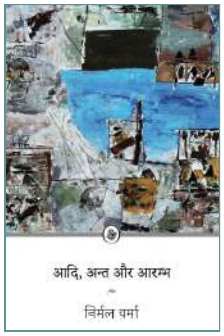

आदि, अन्त और आरम्भ
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

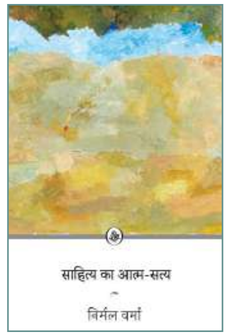

साहित्य का आत्म-सत्य
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

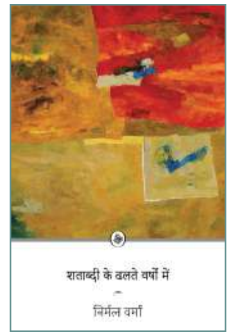

शताब्दी के ढलते वर्षों में
निर्मल वर्मा
मूल्य : 450 | PB
मूल्य : 795 | HB

शब्द और स्मृति
निर्मल वर्मा
मूल्य : 199 | PB
मूल्य : 795 | HB

निबंध

कला का जोखिम
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 । PB
मूल्य : 795 । HB

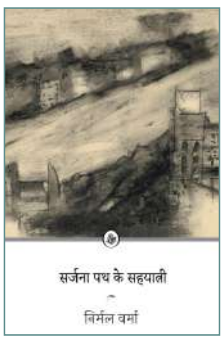

भारत और यूरोप
प्रतिश्रुति के क्षेत्र
निर्मल वर्मा
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 695 | HB

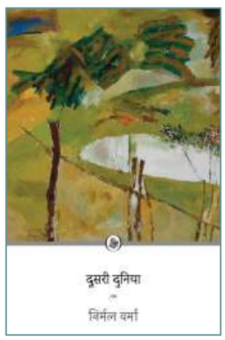

दूसरी दुनिया
निर्मल वर्मा
मूल्य : 599 | PB
मूल्य : 1395 | HB

यात्रा-संस्मरण

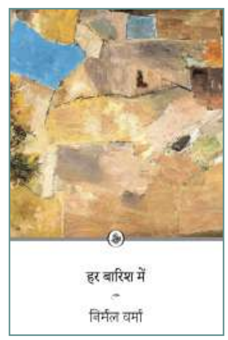

हर बारिश में
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

यात्रा-वृत्तांत

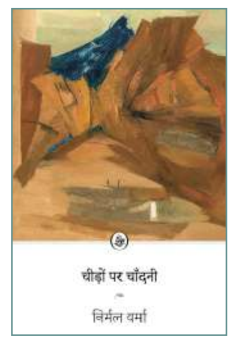

चीड़ों पर चाँदनी
निर्मल वर्मा
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 795 | HB

नाटक

तीन एकान्त
निर्मल वर्मा
मूल्य : 199 | PB
मूल्य : 495 | HB

साक्षात्कार

संसार में निर्मल वर्मा
उत्तरार्द्ध
सम्पादन : गगन गिल
मूल्य : 399 | PB
मूल्य : 895 | HB

संसार में निर्मल वर्मा
पूर्वार्द्ध
सम्पादन : गगन गिल
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 895 | HB

पत्र

देहरी पर पत्र
निर्मल वर्मा
मूल्य : 399 | PB
मूल्य : 995 | HB

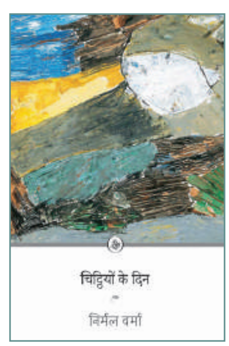

चिट्ठियों के दिन
निर्मल वर्मा
मूल्य : 350 | PB
मूल्य : 895 | HB

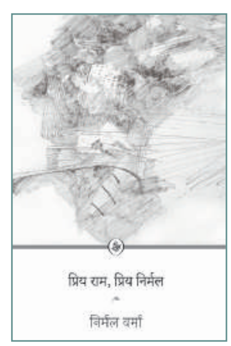

प्रिय राम, प्रिय निर्मल
निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 695 | HB

निर्मल वर्मा द्वारा अनूदित विश्व साहित्य

कहानी संग्रह

ओलेस्या
तथा अन्य कहानियाँ
अलेक्सांद्र कुप्रिन
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 895 | HB

टिकट-संग्रह
कारेल चापेक
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 225 | PB
मूल्य : 650 | HB

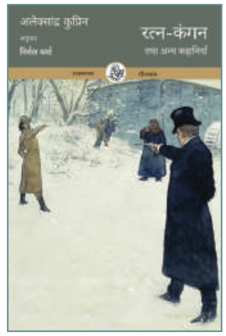

रत्न-कंगन
तथा अन्य कहानियाँ
अलेक्सांद्र कुप्रिन
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 895 | HB

झोंपड़ी वाले
तथा अन्य कहानियाँ
मिहाइल सदौवेन्यु
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 199 | PB
मूल्य : 550 | HB

खेले-खेले में
चेक कहानियाँ
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 750 | HB

उपन्यास

पराजय
अलेक्सांद्र फ़देयेव
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 895 | HB

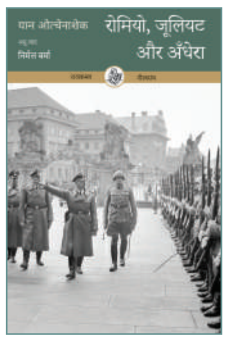

रोमियो, जूलियट और अँधेरा
यान ओत्चेनाशेक
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 750 | HB

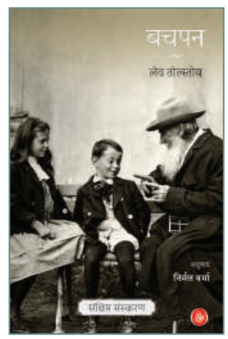

बचपन
लेव तोल्स्तोय
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 199 | PB
मूल्य : 495 | HB

नाटक

आर.यू.आर.
कारेल चापेक
अनुवाद : निर्मल वर्मा
मूल्य : 199 | PB
मूल्य : 550 | HB

गगन गिल की पुस्तकें

यह आकांक्षा समय नहीं
गगन गिल
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 495 | HB

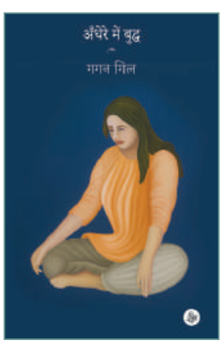

अँधेरे में बुद्ध
गगन गिल
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 695 | HB

एक दिन लौटेगी लड़की
गगन गिल
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 695 | HB

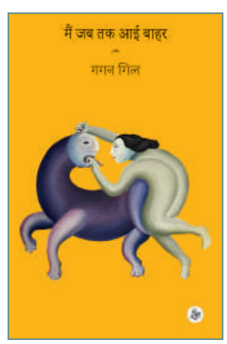

मैं जब तक आई बाहर
गगन गिल
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 695 | HB

थपक थपक दिल थपक थपक
गगन गिल
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 595 | HB

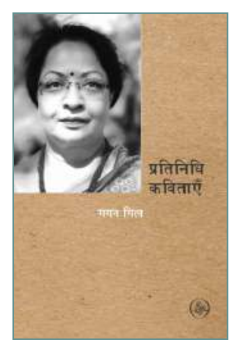

प्रतिनिधि कविताएँ
गगन गिल
मूल्य : 150 | PB

नई आमद

कविता संग्रह

जंगल में झील जागती
हरिभजन सिंह
अनुवाद : गगन गिल
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

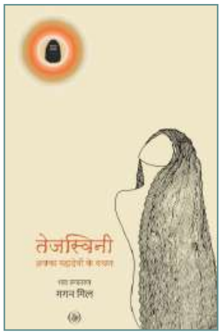

तेजस्विनी
अक्का महादेवी के वचन
भाव रूपांतरण : गगन गिल
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 695 | HB

निबंध संग्रह

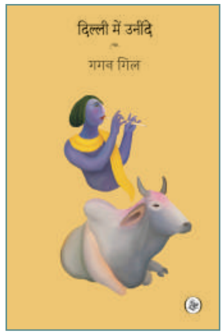

दिल्ली में उनींदे
गगन गिल
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 795 | HB

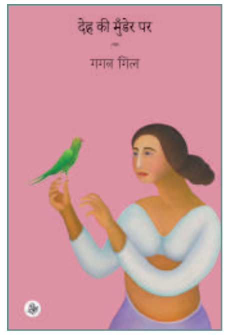

देह की मुँडेर पर
गगन गिल
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 595 | HB

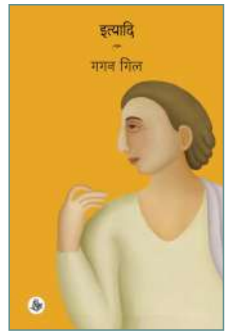

इत्यादि
गगन गिल
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 595 | HB

यात्रा आख्यान

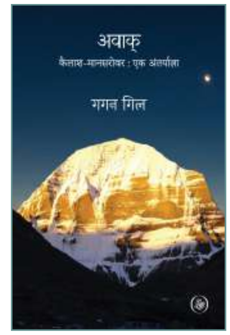

अवाक्
कैलाश-मानसरोवर: एक अंतर्यात्रा
गगन गिल
मूल्य : 399 | PB

उपन्यास

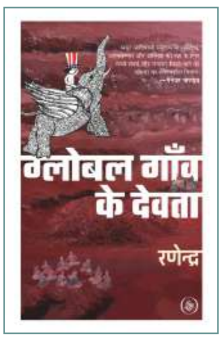

ग्लोबल गाँव के देवता
रणेन्द्र
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 495 | HB

एक ऐलानिया मौत का क़िस्सा
गाब्रिएल गार्सीया मार्केस
अनुवाद : मनीषा तनेजा
मूल्य : 199 | PB
मूल्य : 495 | HB

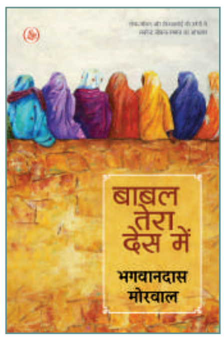

बाबल तेरा देस में
भगवानदास मोरवाल
मूल्य : 499 | PB
मूल्य : 995 | HB

रवीन्द्रनाथ की परलोक चर्चा
अनुवाद : म. ना. भारतीभक्त
मूल्य : 299 | PB

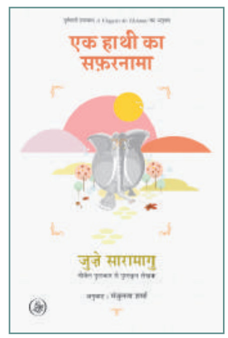

एक हाथी का सफ़रनामा
जुज़े सारामागु
अनुवाद : मंजुलता शर्मा
मूल्य : 299 | PB

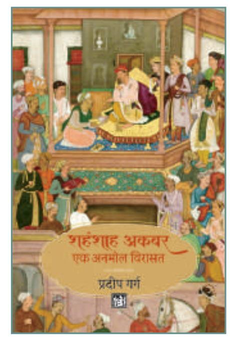

शहंशाह अकबर
एक अनमोल विरासत
प्रदीप गर्ग
मूल्य : 650 | PB
मूल्य : 1095 | HB

उपन्यास

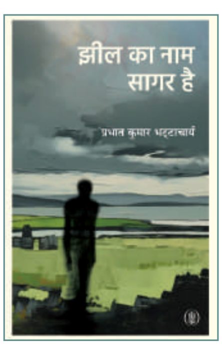

झील का नाम सागर है
प्रभात कुमार भट्टाचार्य
मूल्य : 350 | PB

कहानी

निराले मुसाफिर
गाब्रिएल गार्सीया मार्केस
अनुवाद : मनीषा तनेजा
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 695 | HB

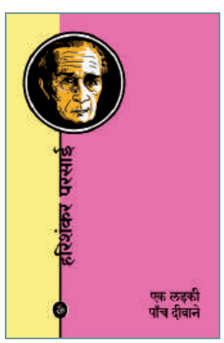

एक लड़की पाँच दीवाने
हरिशंकर परसाई
मूल्य : 199 | PB

मसीहा की आँखें
बलराम
मूल्य : 199 | PB
मूल्य : 595 | HB

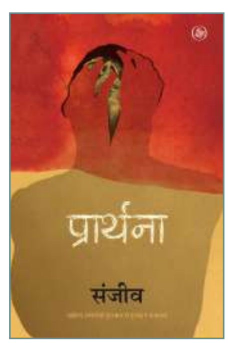

प्रार्थना
संजीव
मूल्य : 250 | PB
मूल्य : 595 | HB

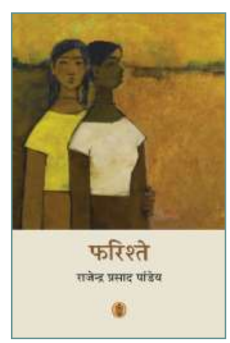

फरिश्ते
राजेन्द्र प्रसाद पांडेय
मूल्य : 595 | HB

शायरी/कविता

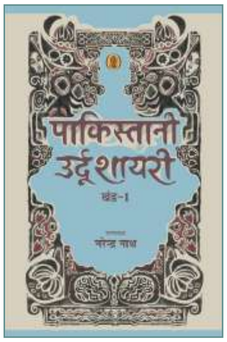

पाकिस्तानी उर्दू शायरी खंड-1
सम्पादक : नरेन्द्र नाथ
मूल्य : 250 I PB

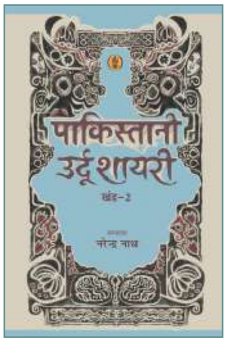

पाकिस्तानी उर्दू शायरी खंड-2
सम्पादक : नरेन्द्र नाथ
मूल्य : 250 I PB

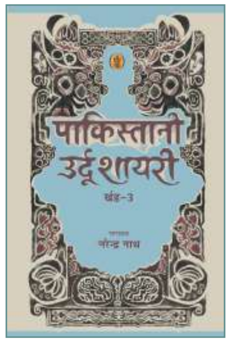

पाकिस्तानी उर्दू शायरी खंड-3
सम्पादक : नरेन्द्र नाथ
मूल्य : 250 I PB

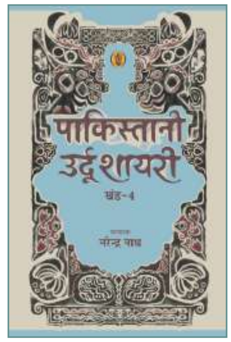

पाकिस्तानी उर्दू शायरी खंड-4
सम्पादक : नरेन्द्र नाथ
मूल्य : 250 I PB

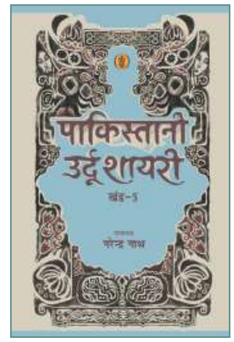

पाकिस्तानी उर्दू शायरी खंड-5
सम्पादक : नरेन्द्र नाथ
मूल्य : 250 I PB

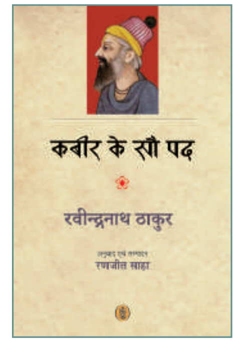

कबीर के सौ पद
रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनुवाद एवं सम्पादन : रणजीत साहा
मूल्य : 299 | PB
मूल्य : 895 | HB

शायरी/कविता

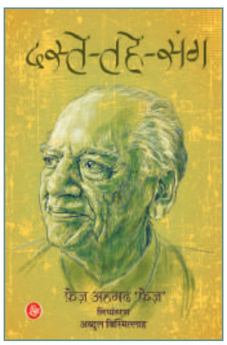

दस्ते तहे संग
फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'
मूल्य : 199 I PB

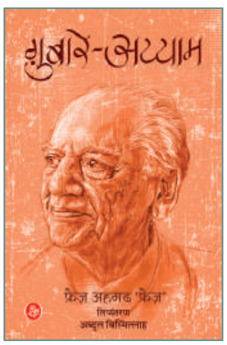

ग़ुबारे-अय्याम
फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'
मूल्य : 199 | PB

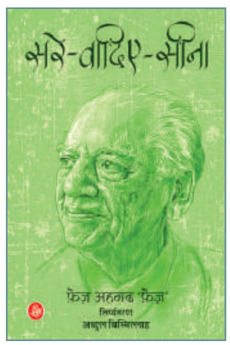

सरे-वादिए-सीना
फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'
मूल्य : 199 | PB

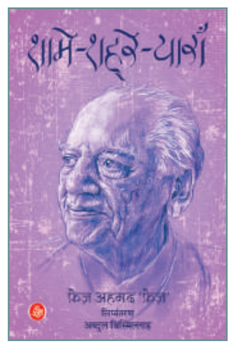

शामे-शहे्-याराँ
फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'
मूल्य : 199 | PB

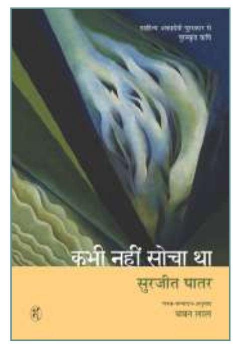

कभी नहीं सोचा था
सुरजीत पातर
सम्पादन-अनुवाद : चमन लाल
मूल्य : 250 | PB

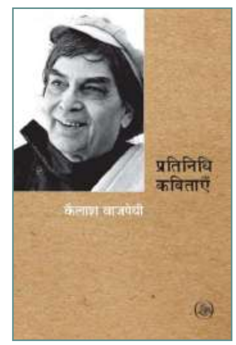

प्रतिनिधि कविताएँ
कैलाश वाजपेयी
मूल्य : 199 | PB

कविता

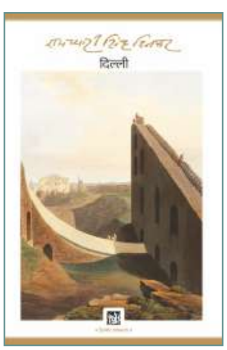

दिल्ली
रामधारी सिंह दिनकर
मूल्य : 395 | HB

स्त्री विमर्श

स्त्री : समाज और धर्म
तसलीमा नसरीन
अनुवाद : उत्पल बैनर्जी
मूल्य : 350 | PB
मूल्य : 895 | HB

स्त्री : अधिकार और कानून
तसलीमा नसरीन
अनुवाद : उत्पल बैनर्जी
मूल्य : 350 | PB
मूल्य : 895 | HB

धर्म-संस्कृति

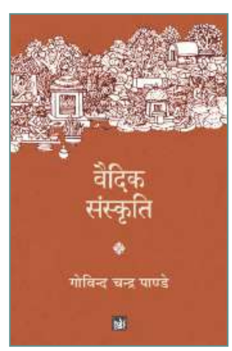

वैदिक संस्कृति
गोविन्द चन्द्र पाण्डे
मूल्य : 699 | HB

संस्मरण

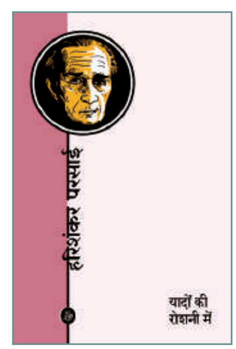

यादों की रोशनी में
हरिशंकर परसाई
मूल्य : 199 | PB

नई आमद

इतिहास

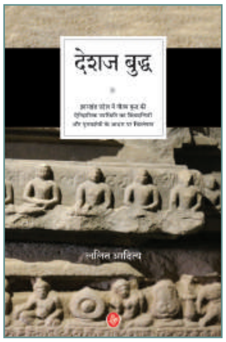

देशज बुद्ध
ललित आदित्य
मूल्य : 395 । HB

स्वतंत्रता संग्राम में झारखंड के अचर्चित नायक
मूल्य : 495 । HB

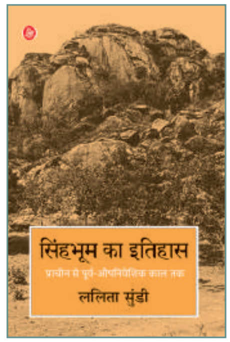

सिंहभूम का इतिहास
ललिता सुंडी
मूल्य : 495 । HB

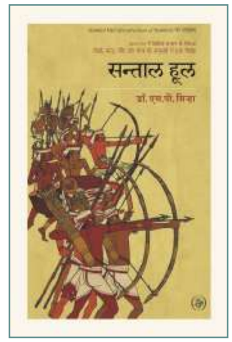

सन्ताल हूल
डॉ. एस. पी. सिन्हा
मूल्य : 395 । HB

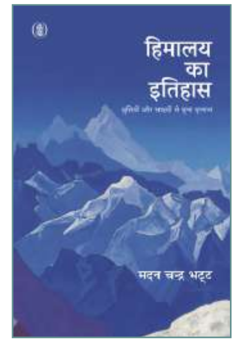

हिमालय का इतिहास
मदन चन्द्र भट्ट
मूल्य : 350 | PB
मूल्य : 995 । HB

इतिहास

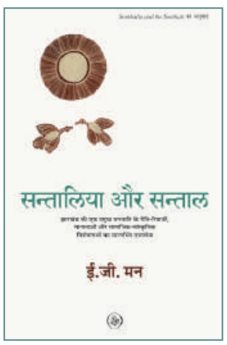

सन्तालिया और सन्ताल
ई.जी. मन
मूल्य : 495 | HB

सन्ताल
परम्पराएँ एवं संस्थान
पी.ओ. बोडिंग
मूल्य : 795 | HB

हम भारत के राज्यों के लोग
संजीव चोपड़ा
अनुवाद : सचिन चौहान
मूल्य : 995 | HB

निबंध

घंटी तो बजनी है
प्रभाष जोशी
मूल्य : 450 | PB

ओटन लगे कपास
प्रभाष जोशी
मूल्य : 450 | PB

आलोचना

निर्गुण काव्य में नारी
अनिल राय
मूल्य : 795 | HB

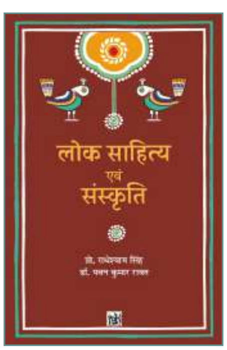

लोक साहित्य एवं संस्कृति
प्रो. राधेश्याम सिंह
डॉ. पवन कुमार रावत
मूल्य : 695 | HB

संस्मरण

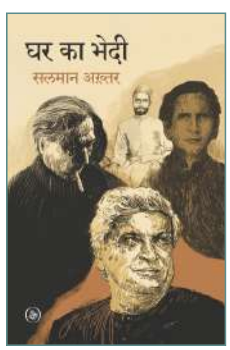

घर का भेदी
सलमान अख़्तर
मूल्य : 595 | HB

आत्मकथात्मक लेखन

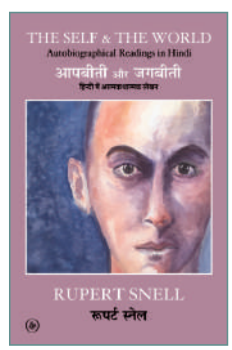

आपबीती और जगबीती
रूपर्ट स्नेल
मूल्य : 1895 | HB

साक्षात्कार

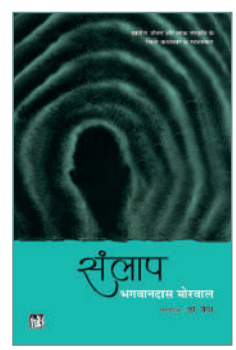

संलाप
भगवानदास मोरवाल
अनुवाद : डॉ. नैया
मूल्य : 695 | HB

नाटक

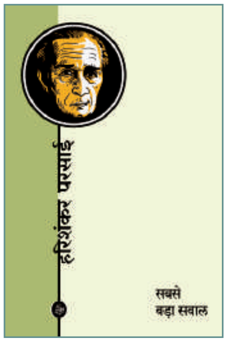

सबसे बड़ा सवला
हरिशंकर परसाई
मूल्य : 199 | PB

स्वर्ग की झलक
उपेन्द्रनाथ अश्क
मूल्य : 495 | HB

छठा बेटा
उपेन्द्रनाथ अश्क
मूल्य : 495 | HB

कोश

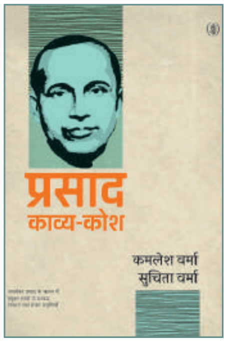

प्रसाद काव्य-कोश
कमलेश वर्मा, सुचिता वर्मा
मूल्य : 1395 | HB

छायावादी काव्य-कोश
कमलेश वर्मा, सुचिता वर्मा
मूल्य : 1995 | HB

जीवन प्रबंधन

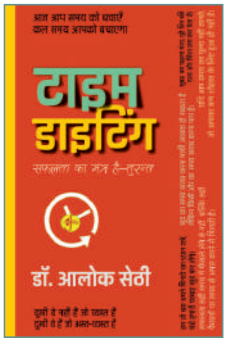

टाइम डाइटिंग
डॉ. आलोक सेठी
मूल्य : 199 | PB

विमुक्ति दिवस

देश में ऐसे अनेक हिस्सों में आज यानी 31 अगस्त को 'विमुक्ति दिवस' के रूप में मनाया जाता है। यह आश्चर्य की बात है कि देश के करोड़ों लोगों के लिए आज का दिन दूसरा स्वतंत्रता दिवस भी है। भारत में शासन कर रहे अंग्रेजों ने 1871 में 'आपराधिक जनजाति अधिनियम' (Criminal Tribes Act) लागू करके कई जनजातियों को जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया था। इसका एक कारण 1857 का विद्रोह भी समझा जाता है। जानकार मानते हैं कि इस विद्रोह में कई जनजातियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। विद्रोह से घबराए अंग्रेजों ने भारतीयों पर नज़र रखने और उन्हें नियंत्रित करने के लिए दर्जनों कानून बनाए। लेकिन इन कानूनों से उन जनजातियों पर नियंत्रण पाना बेहद मुश्किल था जिनका कोई स्थायी ठिकाना नहीं था और जो हमेशा से यायावर रही थीं। इसलिए ऐसी जनजातियों को नियंत्रित करने के लिए इन्हें सूचीबद्ध (Notified) किया गया और 'आपराधिक जनजाति अधिनियम' के तहत इन जनजातियों को अपराधी घोषित कर दिया गया। लगभग 180 सालों तक देश की व्यवस्था ने इन जनजातियों को कानूनी तौर पर जन्मजात अपराधी माना है। 1871 में बने इस अधिनियम में समय-समय पर संशोधन किए गए और धीरे-धीरे लगभग 190 जनजातियों को इसके तहत अपराधी घोषित कर दिया गया। लेकिन देश की आजादी के पाँचच साल बाद 31 अगस्त, 1952 को देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इन जनजातियों को अंग्रेजों द्वारा बनाए गए 'आपराधिक जनजाति अधिनियम' को समाप्त कर इन जनजातियों को आजादी (विमुक्ति) दिलाई। इसीलिए इन जनजातियों के लोगों ने 31 अगस्त को 'विमुक्ति दिवस' के रूप में मनाना शुरू कर दिया और इसे दूसरे स्वतंत्रता दिवस के तौर पर देखा जाने लगा। 'रेत' उपन्यास दरअस्ल इन्हीं ज़ुल्मों की बर्बर और लोमहर्षक कथा है।

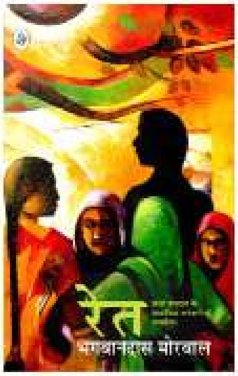

प्रख्यात स्त्रीवादी लेखक तसलीमा नसरीन की दो नई किताबों— 'स्त्री : समाज और धर्म' और 'स्त्री : अधिकार और कानून'—का हुआ एक अनौपचारिक लोकार्पण। तसलीमा नसरीन की यह दोनों किताबें राजकमल प्रकाशन से हाल ही में प्रकाशित हुई हैं। ये समय-समय पर लिखे गए उनके लेखों का संग्रह हैं जिसमें उन्होंने स्त्री के जीवन में समाज, धर्म, कानून और उसके अधिकारों पर विचार किया है।

नंद चतुर्वेदी रचनावली
सम्पादन : पल्लव
मूल्य : 2500 | PB
मूल्य : 6000 | HB

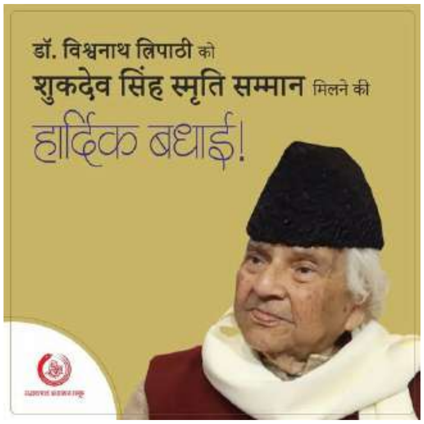
डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी को
शुकदेव सिंह स्मृति सम्मान मिलने की
हार्दिक बधाई!

गीतांजलि श्री
हार्पर बाज़ार वुमन ऑफ़ द ईयर अवार्ड 2024
हार्दिक बधाई!

चन्द्रकान्ता को
स्पंदन कथा शिखर सम्मान 2024
मिलने की हार्दिक बधाई!

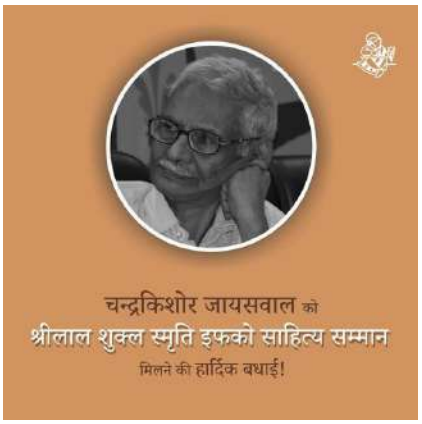
चन्द्रकिशोर जायसवाल को
श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान
मिलने की हार्दिक बधाई!

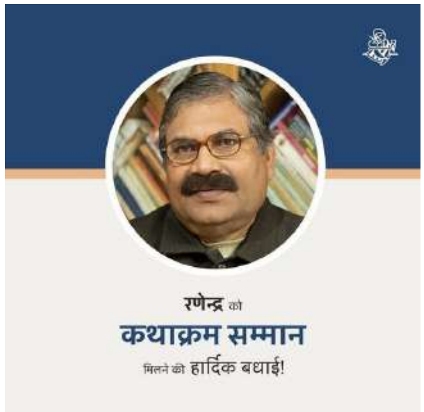
रणेन्द्र को
कथाक्रम सम्मान
मिलने की हार्दिक बधाई!

सूर्यबाला को
स्पंदन कथा शिखर सम्मान 2023
मिलने की हार्दिक बधाई!

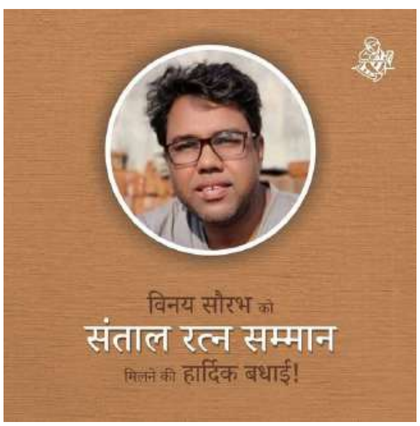
विनय सौरभ को
संताल रत्न सम्मान
मिलने की हार्दिक बधाई!

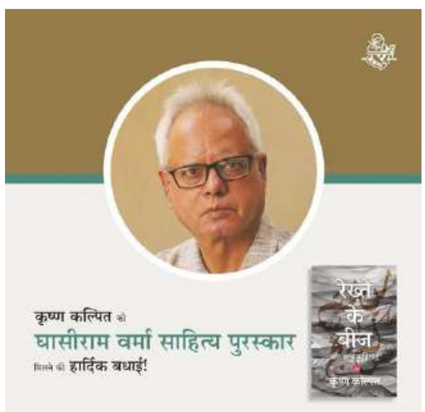
कृष्ण कल्पित को
घासीराम वर्मा साहित्य पुरस्कार
मिलने की हार्दिक बधाई!
रेख़्ते के बीज

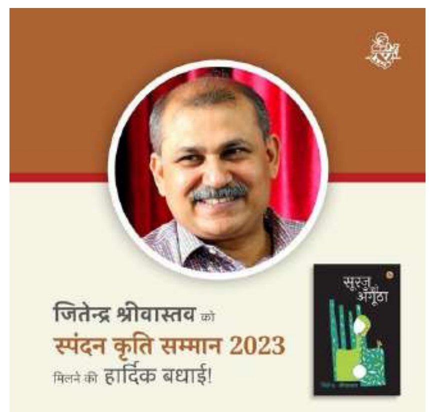
जितेन्द्र श्रीवास्तव को
स्पंदन कृति सम्मान 2023
मिलने की हार्दिक बधाई!
सूरज को अँगूठा

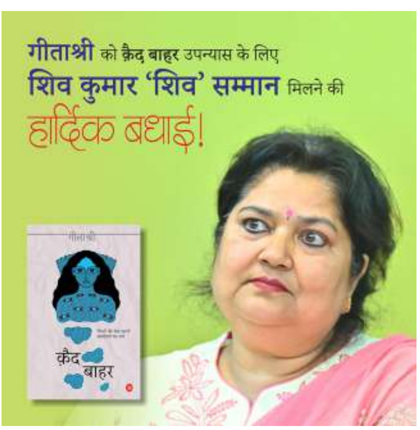
गीताश्री को क़ैद बाहर उपन्यास के लिए
शिव कुमार 'शिव' सम्मान मिलने की
हार्दिक बधाई!
क़ैद बाहर

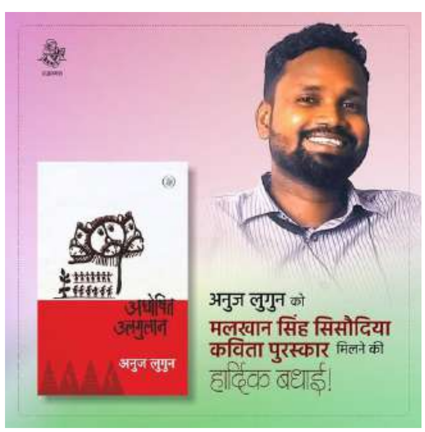
अघोषित उलगुलान
अनुज लुगुन
अनुज लुगुन को
मलखान सिंह सिसौदिया कविता पुरस्कार मिलने की
हार्दिक बधाई!

रेत समाधि
गीतांजलि श्री
गीतांजलि श्री
का उपन्यास
रेत समाधि
अब तमिल में उपलब्ध

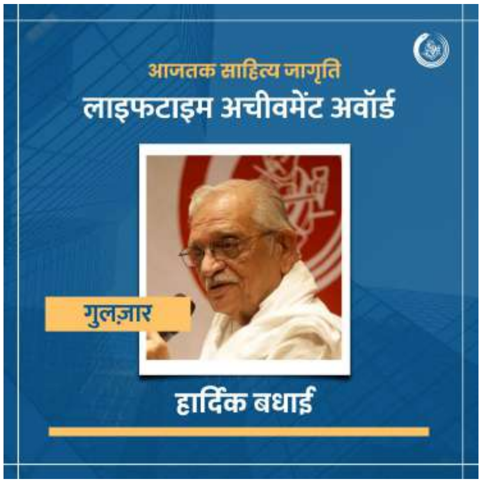

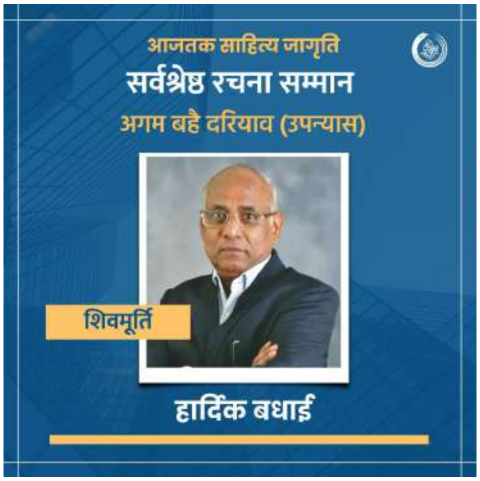

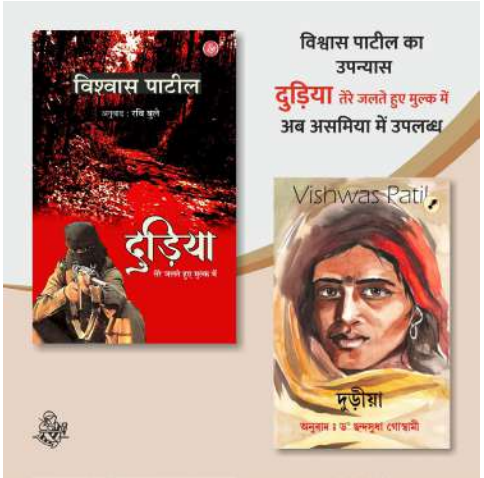

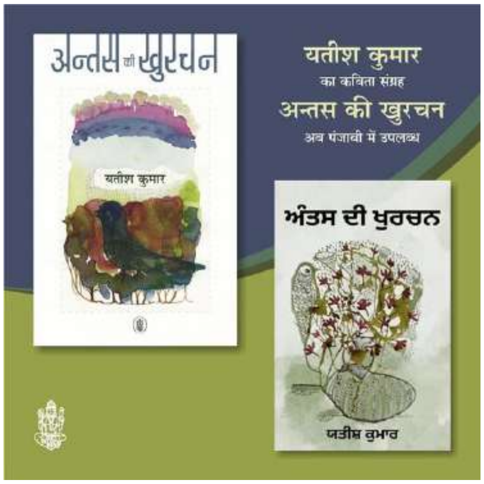

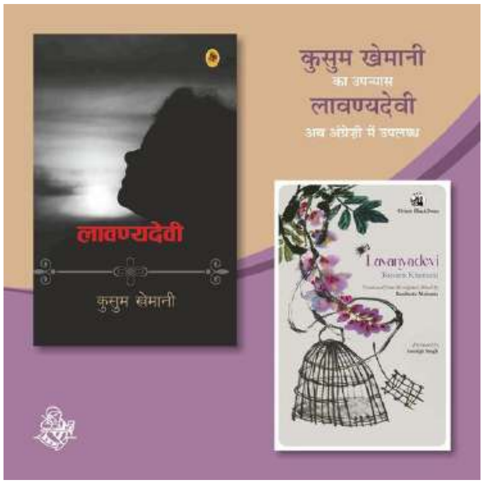

आलोचना ऑनलाइन

www.aalochanamagazine.com

प्रिय पाठक!

हमें यह साझा करते हुए बेहद ख़ुशी है कि 'आलोचना' त्रैमासिकी की आधिकारिक वेबसाइट अब आप सभी के लिए उपलब्ध है। इस वेबसाइट के माध्यम से आप 'आलोचना' के पूर्व अंकों में प्रकाशित चुनिन्दा आलेख और वेबसाइट के लिए विशेष रूप से तैयार की गई पाठ्य सामग्री पढ़ सकेंगे।

जुड़ने के लिए कोड स्कैन करें

चौदहवें माह में तीसरा संस्करण

एस. इरफ़ान हबीब द्वारा सम्पादित किताब 'भारतीय राष्ट्रवाद : एक अनिवार्य पाठ' का मात्र चौदहवें माह में तीसरा पेपरबैक संस्करण आ गया है। एस. इरफ़ान हबीब को हार्दिक बधाई!

किताब के बारे में : 'भारतीय राष्ट्रवाद : एक अनिवार्य पाठ' आधुनिक इतिहासकार एस. इरफ़ान हबीब द्वारा सम्पादित अंग्रेज़ी पुस्तक 'इंडियन नेशनलिज़्म : द एसेंशियल राइटिंग्स' का अनुवाद है। इसमें भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख नेताओं और चिन्तकों के 'भारतीय राष्ट्रवाद' से संबंधित लेख व भाषण-अंश संकलित हैं। यह पुस्तक उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से भारत में राष्ट्रवाद के उदय, विकास, विस्तार आदि की पड़ताल करती है। राष्ट्रवाद का जो रूप आज हमारे सामने है उसके इतिहास और पृष्ठभूमि को जानने-समझने के लिए यह एक ज़रूरी दस्तावेज़ है।

हृषीकेश सुलभ के उपन्यास 'दाता पीर' पर आधारित नाटक का मंचन

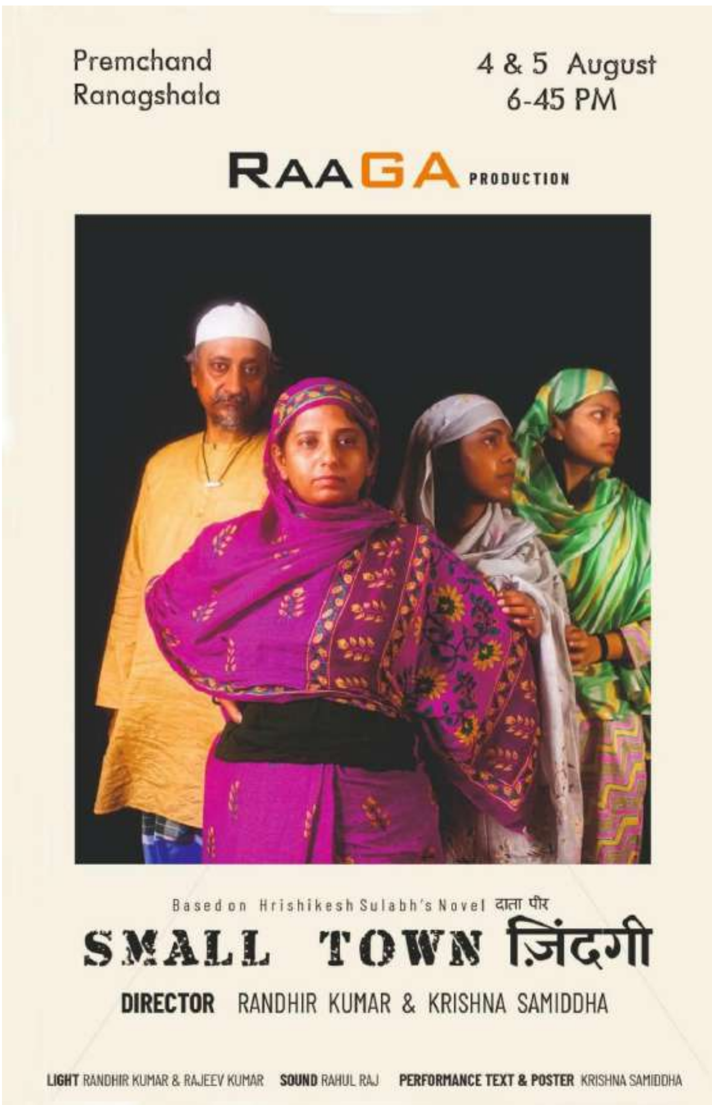

(पृष्ठ 5 का शेष) अगम बहै दरियाव

मात देते लगते हैं। उन्होंने कहा कि लेखक ने किसान से जुड़े कानूनों को बहुत बारीकी से देखा है। चकबंदी और दीवानी मुकदमों में किसानों के पिसने का जीवंत चित्रण किया है। स्त्रीवादी लेखिका रूपम मिश्र ने कहा कि यह उपन्यास श्रमशील स्त्रियों के कठिन जीवन, नैसर्गिक सौंदर्य का आख्यान है। वे अपने पिता और पति से लड़ लेती हैं और जरूरत पड़ने पर उन्हें संभाल भी लेती हैं। स्त्रियों की प्रतिरोध क्षमता को दर्ज करने के साथ-साथ, यह उपन्यास आजादी के बाद के सभी बड़े प्रसंगों इमरजेंसी, मंडल, मंदिर आंदोलन, अस्मिता के संघर्षों इत्यादि को दर्ज करता है। उन्होंने कहा कि 'अगम बहै दरियाव'एक ऐसे समाज का चित्रण है जहां जीवन बरसों से ठहरा हुआ है। जिन सपनों को लेकर आजादी की लड़ाई लड़ी गयी थी, उनके सपना ही रह जाने की कहानी है यह। उन्होंने कहा कि चार दशकों की सामूहिकता और अकेलेपन को समेटे इस नॉवल में सियासी गतिशीलता का बयान इस तरह है कि उपन्यास सामयिक भारतीय राजनीति के क्षरण पर एक दस्तावेज़ भी बन जाता है। सोना और बबलू के प्रेम प्रसंग के संदर्भ में रुपम मिश्र ने बहुत ही सारगर्भित चर्चा पेश की कि कैसे सोना का पति को उसके भविष्य और वर्तमान की चिंता नहीं बल्कि अतीत के अन्वेषण में डूबा रहता है। स्त्री अस्मिता और उसकी गरिमा के उज्जवल आदर्श सोना सहित अनेक पात्र हैं जो श्रमशील समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो न्याय-अन्याय का अंतर समझती हैं और सामंती मूल्यों का विरोध और उनका संघर्ष उनके कथित अपनों के खिलाफ़ कर देता है। वह समाज से ही नहीं बल्कि सत्ता से भी प्रतिरोध करती है।

लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रोफेसर सूरज बहादुर थापा ने कहा कि गोदान (1936), मैला आंचल (1954), राग दरबारी (1967) के बाद शिवमूर्ति का लेखन, खासकर 'अगम बहै दरियाव', भारतीय समाज और व्यवस्था का संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। शिवमूर्ति जैसा लेखक ही 'अमृत काल' में 'गरल काल' की कथा लिख सकता है। समकालीन जनमत के प्रधान संपादक रामजी राय ने कहा कि उपन्यास का केंद्र बिंदु आजादी के बाद का जीवन है। इसका शीर्षक समय की धारा, जीवन की धारा को निरूपित करता है। प्रोफेसर रमेश दीक्षित ने कहा कि 'अगम बहै दरियाव' आंचलिक उपन्यास के रूप में लिखा गया है, लेकिन बनकट गांव पूरे भारतवर्ष की तस्वीर पेश करता है। ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि पर अब तक जितने उपन्यास लिखे गये हैं, यह उन सबसे कहीं आगे का है। कार्यक्रम के समापन से पूर्व, लोक गायक ब्रजेश यादव ने 'अगम बहै दरियाव' में शामिल गीतों पर आधारित अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं, जिनके केंद्र में स्त्री जीवन और भारत की विसंगतियां थीं। कार्यक्रम की बाक़ायदा शुरुआत जन संस्कृति मंच, लखनऊ इकाई के सचिव फ़रज़ाना महदी ने कार्यक्रम की रूपरेखा बयान करते हुए वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए की।परिचर्चा-संगोष्ठी में बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी, बुद्धिजीवी, लखनऊ के सामाजिक कार्यकर्तामौजूद थे।

जयपुर में राजकमल किताब उत्सव का आयोजन

05 अक्टूबर, 2024 (शनिवार) जयपुर। राजकमल प्रकाशन समूह की ओर से 5 से 8 अक्टूबर 2024 तक जयपुर में 'किताब उत्सव' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम जेएलएन मार्ग स्थित जवाहर कला केन्द्र की अलंकार दीर्घा में हुआ। इस चार दिवसीय उत्सव के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी के साथ-साथ पाठक-लेखक सम्मिलन, रचना पाठ, लेखकों के साथ बातचीत, विभिन्न विषयों पर परिचर्चाएँ और नई किताबों के लोकार्पण जैसी अनेक गतिविधियाँ आयोजित हुईं।

किताब उत्सव का उद्घाटन समारोह 5 अक्टूबर को नासिरा शर्मा के मुख्य आतिथ्य में हुआ, जिसमें जितेन्द्र कुमार सोनी और शीन काफ़ निज़ाम जैसी प्रमुख साहित्यिक हस्तियाँ उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, नन्द भारद्वाज, चरणसिंह पथिक, मनीषा कुलश्रेष्ठ, हृषीकेश सुलभ, सम्पत सरल, कृष्ण कल्पित, विजय राही, डॉ. विनय कुमार, नवीन चौधरी, त्रिभुवन, आरजे कार्तिक, अजंता देव, कविता श्रीवास्तव समेत जयपुर और राज्यभर के अनेक नामचीन साहित्यकारों ने भाग लिया।

चार दिवसीय कार्यक्रम में 'भविष्य के पाठक', 'किताब की आवश्यकता', 'सृजन, समाज और शिक्षा', 'कथा का उर्वर प्रदेश : राजस्थान', 'राजनीतिक जीवन और किताबें', 'भक्तिकाव्य और राजस्थान', और 'साहित्य की दुनिया और हम' जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर संवाद किया गया। साथ ही 'नन्द चतुर्वेदी रचनावली' और सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की 'प्रतिनिधि कविताएँ' और 'प्रतिनिधि कहानियाँ' पुस्तकों का लोकार्पण हुआ और उनके कृतित्व पर चर्चा हुई।

जालंधर में किताब उत्सव

22 नवंबर, 2024 (शुक्रवार) जालंधर। राजकमल प्रकाशन समूह द्वारा जालंधर में 20 से 22 नवंबर, 2024 तक तीन दिवसीय 'किताब उत्सव' आयोजित किया गया। इस उत्सव में लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी और अंग्रेजी प्रकाशक स्पीकिंग टाइगर की भी सहभागिता रही।

किताब उत्सव के पहले दिन यायावर लेखक और जानी-मानी शतरंज कोच अनुराधा बेनीवाल के निर्देशन में शतरंज कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का दूसरा सत्र पीयूष मिश्रा के साथ बातचीत का रहा। इस दौरान रेडियो उद्घोषक यूनुस खान ने पीयूष मिश्रा से उनके आत्मकथात्मक उपन्यास 'तुम्हारी औकात क्या है पीयूष मिश्रा' के सन्दर्भ में 'थियेटर से सिनेमा तक की यात्रा' विषय पर बातचीत की।

दूसरे दिन मीडिया विश्लेषक विनीत कुमार के निर्देशन में 'मीडिया रिसर्च में संभावनाएँ' और रेडियो उद्घोषक युनूस खान के निर्देशन में 'वॉयस कल्चर' कार्यशालाओं का आयोजन हुआ। साथ ही विनीत कुमार ने 'बढ़ते डिजिटल टाइम के बीच डिजिटल डिटॉक्स' विषय पर वक्तव्य दिया और लेखक व पॉडकास्टर सरबप्रीत सिंह के साथ 'ये इश्क इश्क है' विषय पर स्पीकिंग टाइगर के एडिटर इन चीफ़ रवि सिंह ने बातचीत की।

तीसरे दिन रवि सिंह के निर्देशन में Read, Write and Publish और कैलिग्राफर व फॉण्ट डेवलपर राजीव प्रकाश खरे के निर्देशन में 'साथ सीखें-सुन्दर लिखें' सुलेख कार्यशाला आयोजित की गई। इस दौरान सुलेख कार्यशाला में भाग लेने वाले 100 से अधिक युवाओं ने 50 मीटर लंबे पेपर रोल पर कैलिग्राफी करके अपनी कला का प्रदर्शन किया। इसके बाद अनुराधा बेनीवाल से सुदीप्ति 'आज़ादी मेरा ब्रांड : जीने की समझ' विषय पर बातचीत हुई और अंतिम सत्र में काव्य पाठ के साथ किताब उत्सव का समापन हुआ।

रराजकमल प्रकाशन समूह द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित कैलीग्राफ़ी/पोस्टर प्रतियोगिता की पुरस्कृत प्रविष्टियाँ

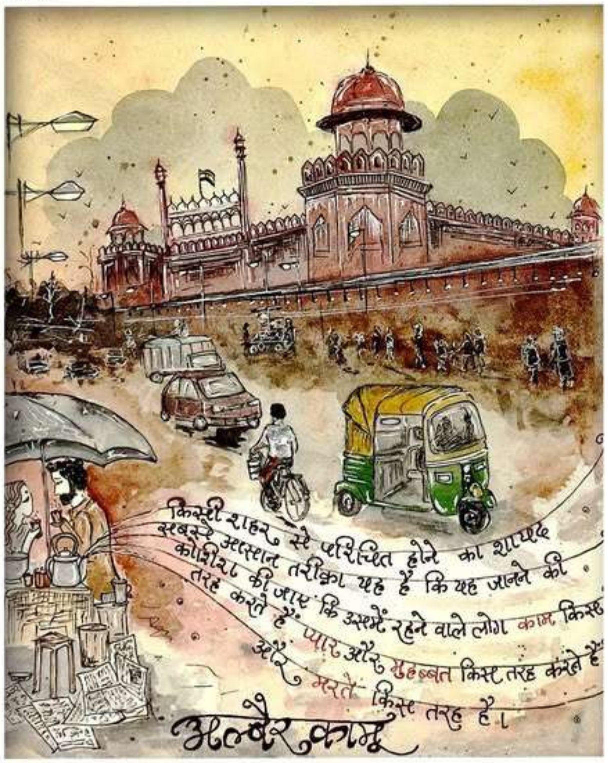

हिन्दी दिवस कैलिग्राफी/पोस्टर प्रतियोगिता
प्रथम पुरस्कार विजेता : मानसी
2024

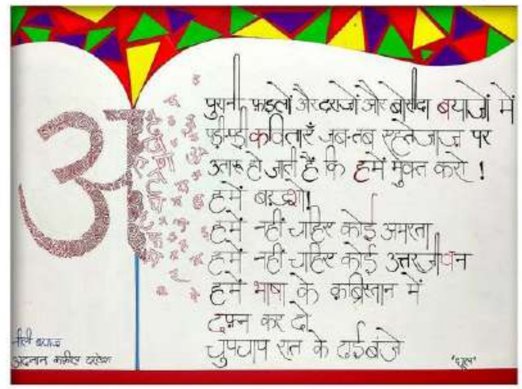

हिन्दी दिवस कैलिग्राफी/पोस्टर प्रतियोगिता
द्वितीय पुरस्कार विजेता : जैनुल आबेदीन
2024

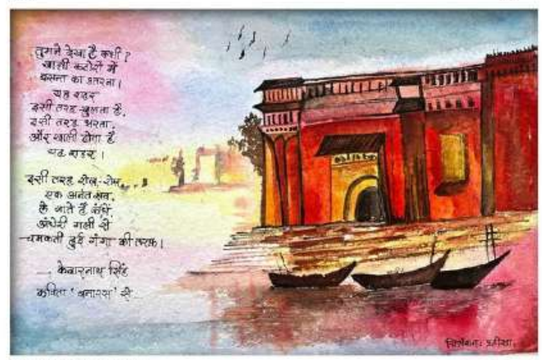

हिन्दी दिवस कैलिग्राफी/पोस्टर प्रतियोगिता
तृतीय पुरस्कार विजेता : प्रतीक्षा पांडेय
2024

हिन्दी दिवस कैलिग्राफी/पोस्टर प्रतियोगिता
विशेष पुरस्कार : राजकुमार बैरवा
2024

हिन्दी दिवस कैलिग्राफी/पोस्टर प्रतियोगिता
विशेष पुरस्कार : विवेक सिंह राजवीर
2024

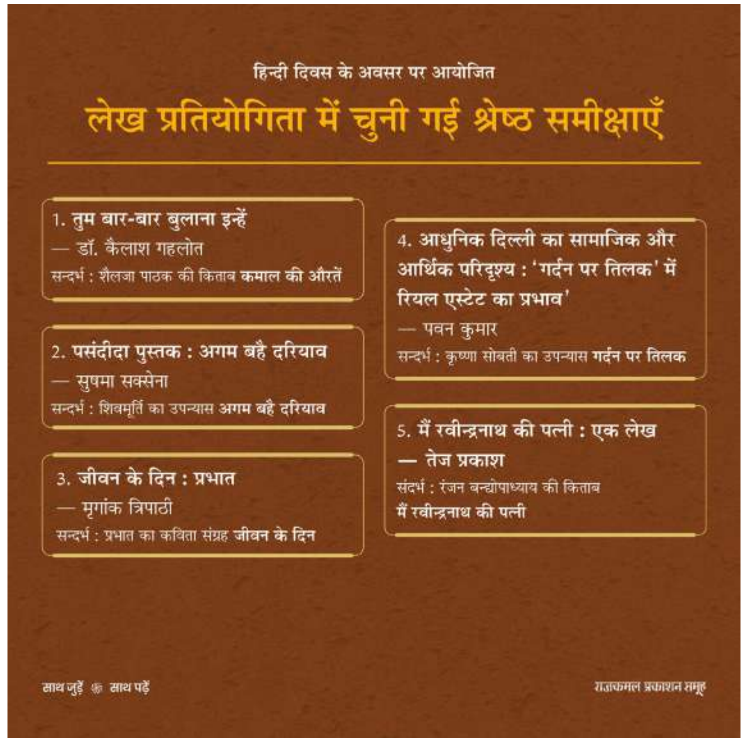

(पृष्ठ 1 का शेष) आपातकाल

सक्रिय रूप से चीजों को बनाने और बदलने में अपनी भूमिका निभा रहे थे। इन्हीं चीजों में मेरी दिलचस्पी ने इस किताब के अनुवाद के लिए मुझे आकर्षित किया।

आपातकाल के ऐतिहासिक कारणों पर बात करते हुए ज्ञान प्रकाश ने कहा, नेहरू के निधन के बाद का जो काल था, उस समय दुनियाभर में राजनीतिक रूप से असंतोष की एक लहर चल रही थी। क्योंकि पिछले कुछ दशकों में आजाद हुए अनेक राष्ट्रों ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाकर अपने नागरिकों से बराबरी का वादा किया था। लेकिन दो-तीन दशक बीत जाने के बाद भी सामाजिक और आर्थिक असमानता उसी तरह बरकरार थी। भारत की राजनीति भी उससे अछूती नहीं रही और इसी से इंदिरा गांधी की सत्ता का संकट पैदा हुआ। व्यवस्था के प्रति इस असंतोष ने देश के युवाओं को आंदोलित किया और आजादी की लड़ाई के सिपाही 'जेपी' ने उन्हें नेतृत्व दिया। आखिर वह दौर लंबा नहीं चल सका लेकिन आपातकाल से हमें जो सीख लेनी चाहिए थी वो हमने नहीं ली। ज्यादातर लोगों का यही सोचना था कि इंदिरा गांधी को सत्ता से हटाते ही सारी चीजें ठीक हो जाएगी। मेरा मानना है कि इस तरह की घटनाओं को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखे बगैर केवल व्यक्ति केंद्रित कर देना हमें कोई समाधान नहीं दे सकता। आगे उन्होंने कहा कि हमारे समाज में, राजनीति में, मीडिया में और पूंजीवादी व्यवस्था में जो बदलाव हो रहे हैं उनके साथ-साथ हमें लोकतंत्र में होने वाले बदलावों को भी नज़र में रखना चाहिए। इस किताब में आपातकाल के ठीक पहले की स्थितियों और लोकतंत्र में आ रहे इन्हीं बदलावों के ऐतिहासिक संदर्भ को समझने की कोशिश की है। मुझे उम्मीद है कि यह किताब पाठकों को देश की वर्तमान स्थितियों के पीछे के ऐतिहासिक संदर्भों को भी समझने के लिए प्रेरित करेगी।

इससे पहले, राजकमल प्रकाशन समूह के अध्यक्ष अशोक महेश्वरी ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा, आपातकाल भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक अप्रत्याशित घटना थी। अवांछित भी। आपातकाल की घोषणा वैधानिक प्रावधानों के जरिये ही की गयी थी। लेकिन तत्काल इसके जो प्रभाव नज़र आए, उनसे स्पष्ट हो गया कि महज तीन दशक पहले आजाद होकर, लोकतंत्र की राह पर आगे बढ़ने वाले देश के लिए यह हतप्रभ और हताश करने वाला कदम था। दरअसल, हमारे युवा लोकतंत्र के लिए आपातकाल एक चेतावनी साबित हुआ। ज्ञान प्रकाश की किताब आपातकाल आख्यान हमारे हालिया इतिहास की इसी परिघटना की बारीक विवेचना करती है। आगे उन्होंने कहा, वैसी किताबें को प्रकाशित करना हमारी प्राथमिकता में रहा है जो बौद्धिक उन्नति में सहायक हो। ऐसी किताबें जो समाज, देश और दुनिया को बेहतर बनाने का जरिया बनें। यह भी एक ऐसी ही किताब है। हमें पूरा विश्वास है कि इस किताब से हमें सोचने-समझने की नई ऊर्जा मिलेगी; अपने समय-समाज को देखने-परखने की सम्यक दृष्टि मिलेगी; और एक सजग नागरिक के रूप में समाज, देश और दुनिया के प्रति बेहतर भूमिका निभाने की प्रेरणा मिलेगी।

(पृष्ठ 1 का शेष) फिलिस्तीन

आग़ा ने कहा, "इजरायल-फिलिस्तीन का विवाद मूल रूप से धार्मिक नहीं बल्कि राजनीतिक मसला है। इस समय फिलिस्तीन के हालात यह है कि वहाँ के लोगों को इंसान समझा ही नहीं जा रहा है। उन्हें जानवरों की तरह मारा जा रहा है।" आगे उन्होंने कहा, "ऐसा नहीं है कि सभी यहूदी फिलिस्तीनी नागरिकों से दुश्मनी का व्यवहार करते हैं। आज भी यहूदियों का एक बड़ा तबका ऐसा है जो इस हिंसा के पूरी तरह से खिलाफ है।" फिलिस्तीन के वर्तमान हालात पर चिंता व्यक्त करते हुए नासिरा शर्मा ने कहा, "फिलिस्तीनी जनता पर जुल्म और अत्याचार पहले भी मैंने अपनी आंखों से देखे हैं लेकिन जो अब हो रहा है, उतना बर्बर जनसंहार पहले कभी नहीं हुआ। जिस तरह से फिलिस्तीन में बच्चों और किशोरों को निशाना बनाया जा रहा है और उनकी जो हालत हुई है, उतनी बुरी हालत पूरी दुनिया में पहले कभी नहीं हुई। इस पर भी पूरी दुनिया जिस तरह से खामोश है, उसे देखकर लगता है कि यह सिर्फ फिलिस्तीन की नहीं, बल्कि इंसानियत की हार है।"

इस किताब की प्रेरणा के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, "जब फिलिस्तीन पर हमला हुआ तो मेरे अंदर का पत्रकार बेचैन हो उठा। मुझे लगा कि मैं इस पर अभी काम नहीं तो कब करूँगी? यह किताब उसी बेचैनी का नतीजा है।"

गीतकार शैलेन्द्र के जन्मशती वर्ष में आ रही गीतों की कहानी पर मुक्कमल किताब

23 नवंबर, 2024 (शनिवार) नई दिल्ली। गीतकार-कवि शैलेन्द्र के जन्मशती वर्ष में उनके गीतों की कहानी पर विविध भारती मुम्बई के रेडियो उद्घोषक युनूस खान ने मुक्कमल किताब लिखी है। 'उम्मीदों के गीतकार शैलेन्द्र' शीर्षक इस किताब का आवरण साहित्य आजतक के कार्यक्रम में जारी किया गया। इसके साथ ही किताब की प्री-बुकिंग भी शुरू की गई।

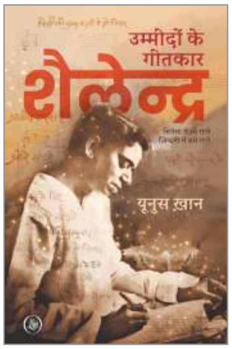

किताब की प्री-बुकिंग शुरू होने के मौके पर लेखक युनूस खान ने कहा, वर्ष 2023-24 गीतकार शैलेन्द्र का जन्मशती वर्ष है। जाहिर है कि यह वो समय है जब हमें शैलेन्द्र के गीतों का विश्लेषण करना चाहिए और उन्हें उस मुकाम पर रखना चाहिए जिसके वो सही मायने में हकदार है। मैंने अपनी किताब में उनके गानों और फ़िल्मों में उनकी जगह का विश्लेषण किया है।

उन्होंने कहा, फ़िल्मी गानें हम सभी सुनते हैं लेकिन अक्सर हम उनकी गहराइयों से परिचित नहीं होते। हमें उनके बनने की कहानियाँ पता नहीं होतीं। 'उम्मीदों के गीतकार शैलेन्द्र' किताब में मैंने इस बात पर जोर दिया है कि शैलेन्द्र के लिखे गाने स्क्रिप्ट में और किरदारों के मद्देनज़र किस तरह से लिखे गए। शैलेन्द्र के लिखे गीत भारतीय समाज की भावनाओं और संघर्षों के प्रतिबिंब बने। यह किताब शैलेन्द्र के जीवन, उनके गीतों की पर्दे पर और पर्दे के पीछे की कहानियों, और उस दौर के हिन्दी सिनेमा के अनूठे माहौल के बारे में बताती है। मुझे उम्मीद है कि यह किताब पाठकों को बहुत पसन्द आएगी और उन्हें अपने पसंदीदा गीतकार को करीब देखने और समझने का मौका देगी।

मन्नू भंडारी के स्त्री-पात्रों पर केन्द्रित नाटक 'बेटियाँ मन्नू की' का लोकार्पण

16 नवंबर, 2024 (शनिवार) नई दिल्ली। कथाकार मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' और उनकी कहानियों के प्रमुख स्त्री-पात्रों पर केन्द्रित नाटक 'बेटियाँ मन्नू की' का लोकार्पण हंस साहित्योत्सव में हुआ। इस नाटक को जाने-माने कथाकार-आलोचक प्रियदर्शन ने लिखा है। सुप्रसिद्ध रंगकर्मी देवेन्द्र राज अंकुर के निर्देशन में अब तक इस नाटक के दो सफल मंचन भी हो चुके हैं।

इस नाटक में वे पात्र और उनका वह जीवन है जिसे पहले मन्नू भंडारी अपनी कहानियों में और अपने उपन्यास में लाईं, वहाँ उन्हें नया जीवन दिया, नई सोच दी और अब उनमें से कुछ इस नाटक में हमारे आज के रू-ब-रू हो रहे हैं। यहाँ ये पात्र अपनी रचयिता से भी बात करते हैं, एक-दूसरे से भी और हमसे भी। 'आपका बंटी' उपन्यास के बंटी और शकुन के अलावा इसमें नौ और कहानियों के किरदार हैं और सब मिलकर उस समय को समझने की कोशिश कर रहे हैं, जब उन्हें रचा गया; जानने की कोशिश करते हैं कि उन्हें वही रूप क्यों दिया; उनकी नियति वही क्यों थी, कुछ और क्यों नहीं! और इस तरह कई नये सवाल और कई सवालों के जबाव हमारे सामने खुलते हैं।

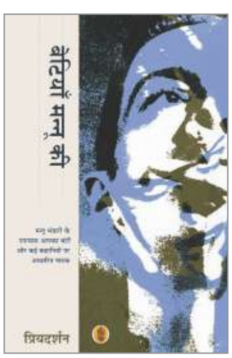

अलग-अलग कहानियों के पात्रों का यह बोलता कोलाज न सिर्फ उन चरित्रों को एक नई रोशनी में हमारे सामने लाता है, बल्कि कथाकार मन्नू भंडारी को समझने में भी हमारी मदद करता है। नाटक विधा में यह एक दुर्लभ और दिलचस्प प्रयोग है।

वीरेनियत एक कविता है, समारोह नहीं

5 नवंबर 2024 नई दिल्ली। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि वीरेन डंगवाल की स्मृति में जन संस्कृति मंच द्वारा इंडिया हैबिटैट सेंटर के गुलमोहर हॉल में सालाना काव्यपाठ 'वीरेनियत-06' का आयोजन हुआ। इस आयोजन में वरिष्ठ साहित्यकार, युवा कवि और साहित्य प्रेमी बड़ी संख्या में शामिल हुए। कार्यक्रम में आमंत्रित आठ प्रमुख कवि—सत्यपाल सहगल, हरिश्चंद्र पांडे, विजया सिंह, पूनम वासम, कविता कादंबरी, अंचित, नादिम नदीम और पराग पावन ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

कार्यक्रम की शुरुआत मृत्युंजय द्वारा वीरेन डंगवाल की अंतिम कविता 'रामपुर बाग की प्रेम कहानी' के पाठ से हुई। कार्यक्रम के संचालक आशुतोष कुमार ने पूर्व आयोजनों की उपलब्धियों पर संक्षिप्त चर्चा करने के बाद कवियों को काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया।

इस दौरान पूनम वासम ने बस्तर के आदिवासी अनुभवों से जुड़ी कविताएँ, जैसे 'शहीद मंगली के लिए' और 'प्रवेश निषेध है', पढ़ीं। सत्यपाल सहगल ने 'माँ की एकाकी चिन्ता' सहित हिंसा और सामाजिक मुद्दों पर आधारित कविताएँ प्रस्तुत कीं। कविता कादंबरी ने 'आधा हिन्दू-आधा मुसलमान' और 'मेरे बेटे' जैसी सामयिक और संवेदनशील रचनाएँ साझा कीं, जबकि अंचित ने 'रोड शो', 'माफ़ीनामा' और इंकलाबी सन्दर्भों पर केन्द्रित कविताएँ पढ़ीं। विजया सिंह ने अपनी कविताओं के जरिए फ़िलिस्तीन में हिंसा और सामाजिक हास्य-व्यंग्य को छुआ, और नादिम नदीम ने उर्दू शायरी की आत्मीयता के साथ सामाजिक-राजनीतिक सन्दर्भ प्रस्तुत किए। पराग पावन ने 'चूल्हे की राख' और बेरोजगारी जैसे गंभीर विषयों पर कविताएँ पढ़ीं।

अन्त में हरिश्चंद्र पांडे ने 'वेश्यालय में छापा', 'मैं इक्कीसवीं सदी का दृश्य हूँ' जैसी कविताओं के माध्यम से सभ्य समाज की विद्रूपताओं और विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों के शोषण पर टिप्पणी की। तीन घंटे तक चले इस कार्यक्रम में दर्शकों की संख्या और उनके धैर्य ने स्पष्ट किया कि वीरेन डंगवाल की कविताओं और उनके प्रभाव में आज भी एक सम्मोहक आकर्षण है।

इस काव्यपाठ में आयोजकों का कहना है कि "वीरेनियत एक कविता है, समारोह नहीं।" इस कार्यक्रम ने कवि वीरेन डंगवाल के प्रति आदर और उनके साहित्यिक प्रभाव को एक बार फिर समाज और युवाओं के बीच लोकप्रियता का परिचय दिया। श्रोताओं की उपस्थिति और उनकी सहृदयता इस आयोजन की सफलता का परिचायक थी।

राजगोपाल सिंह वर्मा के उपन्यास 'फिरंगी राजा' का लोकार्पण और परिचर्चा

10 नवंबर, 2024 (रविवार) देहरादून। लैंसडाउन चौक स्थित दून पुस्तकालय सभागार में रविवार को राजगोपाल सिंह वर्मा के उपन्यास 'फिरंगी राजा' का लोकार्पण और परिचर्चा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम लीलाधर जगूड़ी की अध्यक्षता और अनिल माहेश्वरी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। वहीं बातचीत में बतौर वक्ता डॉ. सविता मोहन, प्रोफ़ेसर शशि प्रभा, कुमार अतुल, जितेन ठाकुर, डॉ. अतुल शर्मा, त्रिलोचन भट्ट और सुहेल वहीद मौजूद रहे।

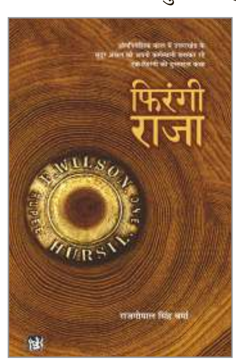

यह उपन्यास औपनिवेशिक काल में उत्तराखण्ड के सुदूर अंचल को अपनी कर्मस्थली बनाकर रहे एक फिरंगी की दुस्साहस कथा कहता है जो उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी की फ़ौज से फ़रार होकर टिहरी गढ़वाल क्षेत्र में आ बसा था। फ्रेडरिक विल्सन नाम के इस अंग्रेज़ अफ़सर को 'हर्षिल का राजा' के नाम से भी जाना जाता है। इस उपन्यास का प्रकाशन लोकभारती प्रकाशन ने किया है।

चर्चा में किताब

राजकमल प्रकाशन समूह द्वारा आयोजित ऑनलाइन पुस्तक मेले से तीन युवा कवियों के कुल पाँच कविता संग्रह मंगवाये परंतु छः संग्रह प्राप्त हुए। मुझे लगा कि शायद गलती से ऐसा हुआ हो। तभी दिमाग में आया कि पाँच खरीदने पर एक मुफ्त का आफर भी तो हो सकता है! इस उहापोह से निकलते हुए जिज्ञासावश सबसे पहले मुफ्त वाले संग्रह को पलटना शुरू किया। आईसका नाम है-अरज निहोरा। मैं अवधी हूँ लेकिन कैलाश गौतम की कविताओं को पढ़ता रहा हूँ इसलिए विश्वास था कि इसे भी पढ़ लूंगा लेकिन इसकी भोजपुरी कैलाश गौतम की अपेक्षा ज्यादा ठेठ है, इसलिए पढ़ते हुए मुखसुख बन नहीं पाता। फिर मृत्युंजय जी की भूमिका पढ़ने लगा। बहुत सुन्दर भूमिका है। भूमिका पढ़कर लगा कि इसे जरूर पढ़ना चाहिए। प्रकाश उदय का यह कविता संग्रह ग्रामीण समाज और लोकगंध को समेटने वाला संग्रह है। शैली सहज और प्रवाहमयी है। ये कविताएँ भोजपुरी पाठकों से सीधे संवाद करने और जुड़ने के लिए हर तरफ़ से खुली हुई लगती हैं। में ग्रामीण जीवन और उसकी सांस्कृतिक धरोहर का क्या होगा? हर कोई अपना गाँव छोड़कर मुंबई, दिल्ली या अन्य बड़े शहरों की ओर रुख कर रहा है। "सारी दुनिया का बोझ लेकर वह सात समंदर पार चला गया" जैसी पंक्तियाँ उस दुख, विस्थापन और वियोग को चित्रित करती हैं। यह दृश्य गाँव का सूनापन और वहाँ की गतिविधियों का ठहराव उस सामुदायिक जीवन की कमी को दर्शाता है, जो कभी गाँव का हिस्सा था। "कोई समूह में निकलता है और गाँव वीरान हो जाता है" जैसे पंक्तियाँ केवल ग्रामीण जीवन की समस्याओं को ही नहीं, बल्कि उस जीवन में एकता और उसकी भावनात्मक गहराई को भी बखूबी चित्रित करती हैं। **— आनन्द मिश्रा**

पल्लवी ने अपने नाम को सार्थक करते हुए अंकुरित प्रेम के ऐसे अनगिनत अफ़सानों को इस किताब में उड़ेला है जिन्हें पढ़कर लगता है कि पल्लवी ने प्रेम में कोई महारत हासिल कर रखी है। एआईजी के पद पर तैनात पल्लवी पुलिस महकमे के कार्य को तो सफल अंजाम दे ही रही है साथ में वह संगीत, फ़ोटोग्राफ़ी व लेखन कार्य में भी काफ़ी रुचि रखती हैं। अंजाम-ए-गुलिस्तां क्या होगा (व्यंग संग्रह), तुम जहां भी हो (काव्य संग्रह) व यात्रा वृत्तांत – 'ख़ुशदेश का सफ़र' के बाद पल्लवी की पुस्तक ज़िक्रे यार चले, लव नोट्स आई है। यह पुस्तक प्यार के अनगिनत रंगों से सराबोर है। इसमें कुल 48 लव नोट्स हैं, जिनमें प्रेम का समूचा संसार बसा है। प्रेम का अहसास एक जैसा होते हुए भी प्रेम का न कोई एक रंग है और न एक रूप, दुनिया में न जाने कितने तरह के प्रेमी हैं और न जाने कितनी तरह की उनकी कहानियाँ। कहीं छत की मुंडेर पर पनपता प्यार तो कही कनखियों और इशारों ही इशारों में पींगे लेता प्यार तो कही वो प्रेम जो कभी कहा नहीं गया और कही हज़ार तरीक़ों से बयान किया गया। कहीं गुस्सा, रूठना-मनाना, शिकायतें, पछतावा, ईर्ष्या, समर्पण व आंसू हैं तो कहीं खिलखिलाहटें भी हैं। कहीं रोज़ प्रेमी के चुम्बन से सूरज उगता है तो कहीं विरह में जगती अनगिनत रातें हैं। कहीं इतनी बेचैनी है कि सीने में दफ़न बरसों पुराना दर्द जाग उठे, कहीं राहत है कि प्रेम की संकरी गली से निकल आने की। कहीं धूप का सफ़र है तो धरासार बरसात भी है। घुटी-घुटी उमस है तो सर्दियों की मीठी गुनगुनी धूप भी है। ज़िक्रे यार चले लव नोट्स में अतीत, वर्तमान व भविष्य- तीनों कालों में स्पंदित दो लोगों के बीच प्रेम का अनूठा संसार समाया हुआ है। इसमें दो राय नहीं कि ये लव नोट्स साठ-सत्तर-अस्सी के दशक के लोगों के सीने में बरसों से छिपे अहसासों व दर्द को हवा ज़रूर देंगे। वे ख़ुद को अतीत में झांकने से रोक नहीं सकेंगे। इन लव नोट्स की छोटी-छोटी कथायें आईना बनकर हमारे आपके इर्दगिर्द ही घूमेंगी। **— शशि सिंघल** *दैनिक ट्रिब्यून*

हम पर है ख़त्म शामे ग़रीबाने लखनऊ

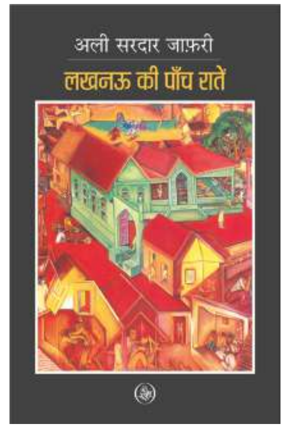

आज़ादी से दशक भर पहले के लखनऊ के हवाले से उस दौर की सियासी और अदबी हलचलों के तमाम अक्स अली सरदार जाफ़री के संस्मरण 'लखनऊ की पाँच रातें' में दर्ज हैं। ये दिलचस्प संस्मरण उन ख़्वाबों की गवाही देते हैं, जो अपनी हक़ की लड़ाई लड़ने वाले लाखों-करोड़ों लोगों ने देखे और जिसे मजाज, नाज़िम हिकमत, पाब्लो नेरुदा सरीखे शाइर अपनी नज़्मों में बयान करते रहे।

सरदार जाफ़री के इन संस्मरणों में बलरामपुर, अलीगढ़, लखनऊ से लेकर चटगाँव और स्तालिनग्राद तक की मुख़्तलिफ़ यादें मौजूद हैं। यादों के उन मोतियों को एक धागे में पिरोने का काम करती है इंसानियत की तरफ़दारी, अमनपसंदी और हर क़िस्म के ज़ोर-ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने की हिम्मत। **— शुभनीत कौशिक**

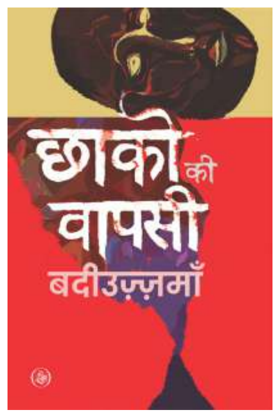

'छाको की वापसी' के बारे में पहली बार अपने एक जूनियर से जाना। जिसने संभवत: एम.फिल. में काम करने के लिए इस उपन्यास को चुना था। उसके अरसे बाद इसका जिक्र एक विद्यार्थी ने किया जिसने एक अनुवाद फेलोशिप के लिए इस उपन्यास को चुना उसके कुछ अंशों का अनुवाद भी किया। उस अनुवाद को देखते हुए उपन्यास के कुछ अंशों को पढ़ने के बाद पूरा पढ़ने की तलब तेज हुई। जब यह उपन्यास पढ़ कर समाप्त किया है तो एक उदासी सी तारी है।

विभाजन पर लिखे साहित्य में पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा कम है। विभाजन के इस हिस्से के किस्से को जानने के लिए और आज बांग्लादेश जब इतिहास के अहम मोड़ पर खड़ा है तो आज के हालात को समझने के लिहाज से भी उपन्यास पढ़ना और दिलचस्प हो जाता है। उपन्यास बिहार के गया के पात्रों और परिवेश की कहानी कहता है जिसमें राजनीतिक रूप से मुस्लिम समाज दो हिस्सों में विभाजित है कांग्रेस और मुस्लिम लीग और दोनों की बीच कटुता तीव्र है। इन के बीच साधारण मुस्लिम समाज भी है उनके पर्व हैं, आर्थिक दुश्वारियां हैं, परिवार के बीच का झगड़ा है और फैसला करने की चुनौतियां भी कि किधर जाएं। इनकी दुनिया हिंदुओं के साथ से पूरी होती हैं जो पर्व त्यौहार, दु:ख दर्द में शामिल हैं। उपन्यास में गया शहर का जीवन भी दर्ज है। उपन्यासकार ने मध्यमवर्गीय पात्र के रूप में वाचक और एक निम्नवर्गीय पात्र छाको के बीच पैराडॉक्स रच के उस समय के समाज का यथार्थ रचा ही है मुस्लिम मन और समाज के भीतर की विसंगतियों की बारीक बुनाई की है। वाचक की अपने परिवेश से एक निस्संगता है इसलिए वह अपने परिवार और अपने आस-पास की दुनिया का ईमानदार अवलोकन करते हुए उसके अंतर्विरोधों की सटीक पहचान करता है। मुस्लिम समाज के भीतर गैर बराबरी की मानसिक परतों और सामाजिक व्यवहारों को भी उधेड़ा गया है। इसी के साथ उसके बयान में यह पढ़ा जा सकता है कि इन सालों में मुस्लिम और हिंदू समाज के बीच कहां दूरी बढ़ी है और उसको कम करने की कैसी कोशिशें होनी चाहिए थी। पाकिस्तान के विचार की निरर्थकता और उसके भविष्य को भी उपन्यास भांप लेता है और यह उन पत्रों से जाहिर होता है जो पाकिस्तान चले जाने वाले लोग लिखते हैं। अपनी काल्पनिक जन्नत की तरफ जाने में वह अपनी मिट्टी से ही उजड़ जाते हैं और संतुष्ट नहीं रहते। विभाजन में कौन से लोग स्वेच्छा से जाना तय करते हैं इसकी एक अंतरश्रेणीयता भी है। **— अमितेश कुमार**

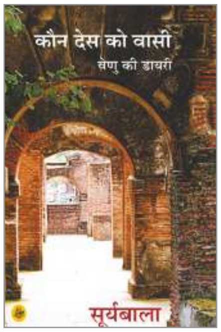

सूर्यबाला का “मैग्नम ओपस” —कौन देस को वासी-एक विराट वितान को जीवंत कर देने वाली तूलिका का करिश्मा है जिसमे सबसे ऊपर उभर आने वाला रंग है उनकी संवेदनशीलता का. इस अद्‌भुत उपन्यास को लिखते समय क्या उनकी अपनी आँखें कई बार नम होकर धुंधला आई होंगीं? चार सौ पृष्ठों की यह वृहद् कथा प्रवासी जीवन में पूरी तीन पीढ़ियों के घुलमिल कर विलीन होने की गाथा है। अमेरिका में काफी कुछ पाकर भी बहुत कुछ खो देने की खट्‌मीठी अनुभूति में उपन्यास के मुख्य पात्र ही नहीं बल्कि पूरा का पूरा प्रवासी भारतीय जगत डूबताउतराता है। और पाठक? पढने से पहले उसके मन में प्रश्न कौंधता है ‘अमेरिका में बस जाने और फिर भी लगातार भारत से संपर्क बनाए रखने वाले प्रवासियों की तस्वीर क्या अब तक भारत के गाँव-गाँव, गली-गली में सुपरिचित नहीं हो चुकी है? यही उपन्यास अबसे दस साल पहले लिखा जाता तो क्या बहुत से सारे ऐसे रहस्य नहीं खोलता जो जगज़ाहिर हो जाने के कारण अपनी ताजगी खो चुके हैं?’ लेकिन वेणु की डायरी के विराट चित्र में घुसकर कुछ पृष्ठों की राह तय करते ही वह महसूस करने लगता है कि उसका सोचना कि ग्लोबल विलेज बन चुकी इस दुनिया के सबसे चमकीले भाग को आधुनिक मीडिया और सुने सुनाये संस्मरणों के सहारे वह पूरी तरह देख समझ चुका है, उसकी सबसे बड़ी भूल थी। जिसे वह पूरा चित्र समझे बैठा था उसके नीचे कई सारी परतें हैं। इन परतों को बखिया-दर-बखिया उधेड़ती चलती सूर्यबाला की लेखनी का कौशल देखकर वह हैरान रह जाता है। कभी उनके अवलोकन की गहराई तो कभी अमेरिकी इन्द्रधनुष के छोर पर धरती में गड़े खजाने की खोज में खुद खो गए प्रवासियों के मानस में उतर जाने की उनकी क्षमता उसे स्तंभित कर देती है। लेकिन अंदरूनी अतृप्ति के जो प्रश्न यह उपन्यास उठाता है वे शाश्वत हैं, अमेरिका में भारतीय प्रवासियों पर उतना ही लागू होने वाले जितना हर पल अमेरिका की अन्धी नक़ल कर रही नए भारत की नई पीढी पर। क्या बहुत जल्दी ही भारत में उग रही नयी पौध पर भी अमेरिकी खोखलेपन का कीड़ा नहीं लग जाएगा? वेणु की डायरी इस सन्दर्भ में कालातीत है, संपन्न हो चुकी यात्रा का सफरनामा मात्र नहीं **—अरुणेन्द्र नाथ वर्मा** *फेसबुक*

आलोचना पुस्तक 'नवां दशक' के लेखक अविनाश मिश्र के अनुसार, इस दौर में बाजार में रहकर बाजार-विरोध या बाजारवाद-विरोध का साहित्य गढ़ा जा रहा है। इस महादृश्य में हिन्दी कविता ने अपने दायरे से बाहर देखना शुरू किया। वह सही अर्थों में समकालीन रही। उनकी यह किताब इन्हीं तथ्यों का बारीकी से अध्ययन करती है। इसमें नौ कृतियों की रचनाओं के माध्यम से नवें दशक की कविता का गहराई से मूल्यांकन किया गया है। लेखक की दृष्टि और गहरी समझ से यह किताब कविता एवं आलोचना के क्षेत्र में एक नई उम्मीद जगाती है। **—अमर उजाला**

गीत चतुर्वेदी ने अपने गल्प व कविताओं में अवाँ-गार्द भाव दिखाया है। उनका अध्ययन बेहद विस्तृत है जो कि उनकी पीढ़ी के लिए एक दुर्लभ बात है। यह पढ़ाई उनकी रचनाओं में अनायास और सहज रूप से गुँथी दिखती है। उनकी भाषा व शैली अभिनव है। उनके पास सुलझी हुई दृष्टि है जिसमें क्लीशे नहीं और जो कि वर्तमान विचारधारात्मक खेमों के शिकंजे में भी फँसी हुई नहीं है। **—अशोक वाजपेयी**

“नदी इतनी पतली थी कि उसमें अब बस धूप से सनी थोड़ी नींद बहती थी।” पहली कहानी के पहले पन्ने पर ऐसी काव्यात्मक भाषा मिल जाए तो पठनीयता की भी ट्यूनिंग हो जाती है। नदी का पेट के मुहाने में बदल जाने की कहानी है यहाँ। नदी टूटी-फूटी चीज़ों के बीच ख़ुद को साबुत ढूँढ़ने की कोशिश कर रही है। कहानी है—'कथा में नदी बहती थीं'। टपरी पर चायवाला अख़बार क्यों रखता है और लोग क्यों अख़बार पढ़ते हुए चाय पीते हैं, इसकी व्याख्या गाँव के ग्लोबल होने की दास्तान के साथ उपस्थित है इस किताब में। कथा-कहन के शिल्प में विनोद कुमार शुक्ल की छाया का दिखना यहाँ बहुत सुखद है। ये पंक्तियाँ अपने साथ संसार की बात भी कर देती हैं। लगता है कि जैसे शब्दों के अनुक्रम पर लेखक अगर यूँ काम करता है, तो अर्थ का व्योम ही बड़ा हो जाता है। पंक्ति का डैना तोता से चील-सा हो जाता है। घटना का विवरण कुछ ऐसे किया गया है, मानो अपने पड़ोस का मसला हो। **— यतीश कुमार** *हिन्दवी बेला*

The Heartbeat of Rural Life

Shivmurti is a master storyteller of contemporary rural life, and Agam Bahai Dariyav represents the pinnacle of his experience and art of storytelling. This tale of Bankat village, nestled by the Kalyani River, portrays the plight of farmers and labourers throughout North India. It includes everyone, forward castes, backward castes, Dalits, and minorities each an equal stakeholder in this world. This sets the stage for a deeply authentic journey into the life of farmers, told with a richness that only someone who has lived it could offer. Agam Bahai Dariyav, spanning four decades, tells the story of North Indian peasants whose lives are worsening over time. This river of sorrow captures the essence of the Indian farmer, whose strength, culture, humanity, and courage keep him alive despite national neglect. **— Ashutosh Kumar Thakur** *outlook*

चंदन पांडेय का यह नया कहानी संग्रह है। कुल सात कहानियाँ हैं। हर कहानी अलग-अलग सामाजिक जड़ता पर चोट है। 'चोट' कहानी में 'जूतों' के बदलते हुए राजनीतिक अर्थ और उसके मुनाफे पर टिप्पणी है। पत्रकार और लेखक उसे कैसे अपने तरह से प्रतिरोध का प्रतीक बना सकते हैं, जूते मारना मुहावरे को नया र्थ दे सकते हैं उसे ठीक से यह कहानी बरतती है। 'पितृपक्ष' बदलते हुए ग्रामीण परिवेश में टूटता हुआ जातिगत अकड़ और शोषित समाज का जागता हुआ स्वाभिमान का बड़ा सहज चित्रण है। 'उस्तरा' यहाँ शक्ति संघर्ष का बड़ा सटीक प्रतीक बनकर आता है। 'कथायुक्ति का अपराधबोध' में भारतीय कथा कहने की परंपरा का सहारा लेते हुए मध्यवर्गीय आकांक्षाओं का क्रूरतम रूप उभार कर हमारे सामने लाता है। इस संग्रह की खास बात यह है कि लगभग हर कहानी में 'स्मृतियों' का सुंदर प्रयोग है। लेकिन यही स्मृतियाँ कहीं कहीं कथा का इतना विस्तार दे देती है कि खटकने भी लगता है। **—महेश कुमार** *फेसबुक*

चर्चा में किताब

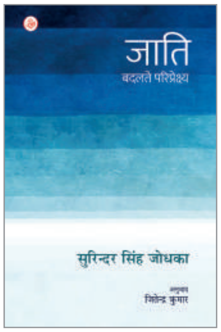

जाति से संबंधित कई जरूरी सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर सुरिन्दर सिंह जोधका द्वारा लिखित किताब 'जाति: बदलते परिप्रेक्ष्य' में की गयी है. सात अध्यायों वाले इस किताब की प्रस्तावना में लेखक ने सही ही लिखा है कि 'आज जाति का प्रश्न इसलिए भी जटिल है क्योंकि यह 'भारतीय आधुनिकता' के प्रश्नों में गहरे अंतर्निहित है.' 'पारम्परिक अवधारणा' शीर्षक अध्याय में जाति, असमानता और सामाजिक बहिष्कार जैसी कड़वी हकीकतों का विश्लमण करते हुए यह रेखांकित किया गया है कि जाति का अन्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं, जैसे- नातेदारी- रिश्तेदारी, सत्ता शासन और श्रम संबंध के साथ घनिष्ठ संबंध है. भविष्य में जिस रूप में अन्य सामाजिक संस्थाओं और वैचारिक व्यवस्थाओं में बदलाव होगा, वैसा ही बदलाव बड़े सामाजिक और आर्थिक ढांचे में परिवर्तन के साथ जाति के बारे में आयेगा. 'शक्ति और शक्तिहीनता' अध्याय में इस पहलू को उजागर किया गया है कि आज जाति शब्द का सबसे ज्यादा इस्तेमाल लोकतांत्रिक और चुनावी राजनीति के संदर्भ में होता है. आम जन से लेकर मीडिया के चुनाव विश्लेषक और गंभीर अकादमिक विश्लेषक तक, लगभग सभी जाति को भारत में लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रक्रिया के काम को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखते हैं. 'जाति के बदलते स्वरूप' अध्याय में जाति की आधुनिकता पर रोशनी डाली गयी है. इसमें यह बताया गया है कि सकारात्मक कार्रवाइयों तथा आरक्षण जैसी नीतियों की बदौलत दलित मध्य वर्ग के बढ़ते आकार के साथ जाति आधारित पूर्वाग्रहों के खात्मे के लिए आवाज भले ही मुखर होती गयी है, पर जातिगत संबंधों की कठोरता और जड़ पारंपरिक मानसिकता की वजह से दलितों की स्थिति में आमूलचूल बदलाव नहीं हो पाया है. जातिगत पूर्वाग्रह और जाति आधारित सामाजिक बहिष्कार शहरी जीवन का भी एक तथ्य है. किताब की सरल भाषा पाठक को सहज ही आकर्षित करती है और जाति जैसे जटिल विषय पर नये सिरे से सोचने पर मजबूर करती है। **—रजनीश प्रसाद** *फेसबुक*

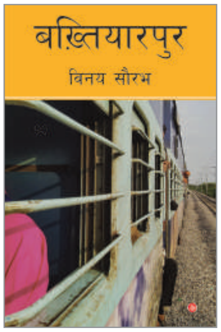

बख़्तियारपुर - विनय सौरभ राजकमल पेपरबैक्स प्रेम के विविध रंगों को समझने निकला, कवि वैधनाथ का दोहा करने वाला लड़का असल में प्रेम को नहीं अपनी स्मृतियों को खोजने निकला है। उसकी स्मृति में उसका क़स्बा बनता गाँव, पिता, माँ, मौसी, बहनें, दोस्त या एक शब्द में कहूँ तो `रिश्ते' हैं। मुझे जाते हुए लोगों की चित्रकारी करता हुआ उसका स्ट्रोक्स, कील गाड़ने जैसा लगता है। टू डायमेंशनल जब ट्री डाइमेंशनल हो जाये तब हाथों की स्मित और आँख में तीरता दृश्य डूबती नाव का चित्रण कर रहे होते हैं और ऐसे दृश्य सच में बहुत रुलाते हैं।स्मृतियों में प्रार्थनाएँ हैं, हम्द का लोबान है, जिसकी ख़ुशबू में तिरती पंक्तियों से विनय कविताएँ रचता है और कह देता है, ईश्वर से ज़्यादा मेरे बारे में सोचा माँ ने। क़िस्सों की ख़ुशबू से लिपटी मुलायम कविताएँ अक्सर पढ़ते हुए नम कर देंगी आपकी आँखें। कविता भीतर कुछ टपका देती है और फिर धीरे-धीरे लेमनचूस की तरह घुलने का स्वाद आता रहता है। कहकहों का घर से जाना दरअसल पिता का जाना है। कविता में पिता की एक क़मीज़ फ़क़ीर को दे दी जाती है और दूसरी खूँटी पर रखी है। जीवन का दर्शन यहीं से आता है। गुम होते डाकिये और नहीं आती चिट्ठी को याद करता कवि, किताबों की घटती इस दुनिया में जिल्दसाज़ की घटती छाया से परेशान है। धूल लगी स्मृतियों को फूँकता है जब, थोड़ी धूल और उड़ जाती है। अंत में इतना कहना जरुर चाहूँगा कि इस किताब की 'पुल' शीर्षक कविता जैसे इस पूरी किताब का जोड़ है। **—यतीश कुमार** फेसबुक

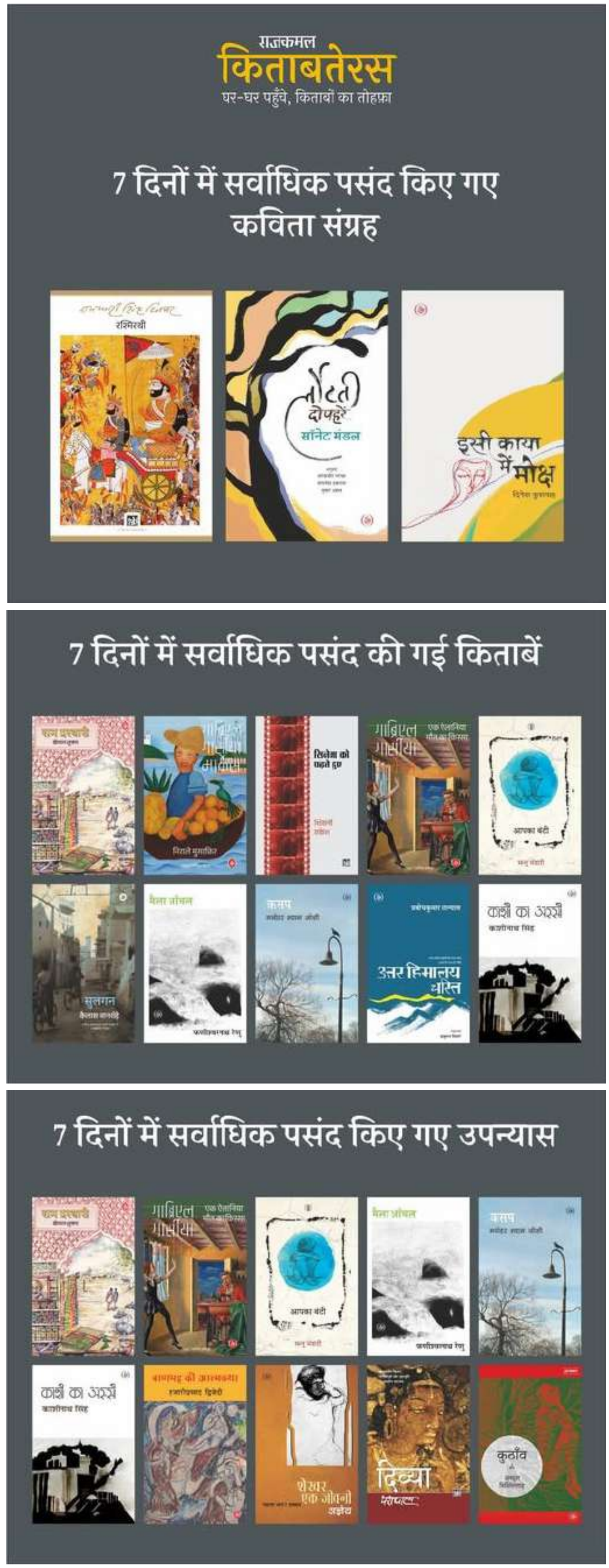

राजकमल ने मनाया 'किताबतेरस'

नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन समूह की सालाना दीपावली सेल 'किताबतेरस' 18 अक्टूबर से शुरू हुई। इसके तहत पाठकों को 27 अक्टूबर तक राजकमल की वेबसाइट (www.rajkamalprakashan.com) और राजकमल प्रकाशन ऐप से किताबों की खरीदारी करने पर आकर्षक छूट मिली। साथ ही, प्रत्येक खरीद पर पाठकों को दीपावली गिफ़्ट भी दिया गया। किताबतेरस की अवधि के दौरान इस वर्ष प्रकाशित 200 से अधिक विभिन्न विधाओं की किताबों पर पाठकों को विशेष छूट दी गई। यह छूट राजकमल प्रकाशन समूह की सभी शाखाओं में भी मान्य रही। 'हर घर दीपक-हर घर किताब' अभियान राजकमल प्रकाशन के निदेशक आमोद महेश्वरी ने कहा, त्योहारी मौसम में हर साल राजकमल प्रकाशन समूह द्वारा किताबतेरस उत्सव में पाठकों को आकर्षक छूट पर किताबें उपलब्ध करवाई जाती है। इस बार किताबतेरस में पाठकों के लिए खास महाबचत कॉम्बो और दीपावली गिफ़्ट सेट मुख्य आकर्षण रहे। उन्होंने कहा, किताबतेरस उत्सव में हमने इस वर्ष 'हर घर दीपक-हर घर किताब' अभियान की शुरुआत की। हमारा उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोगों को किताबों से जोड़ना और हर घर तक ज्ञान का प्रकाश फैलाना है। इस अभियान के माध्यम से हमने त्योहार पर किताबों को उपहार स्वरूप देने के चलन को बढ़ावा देने का प्रयास किया। राजकमल प्रकाशन समूह त्योहार के मौसम में पिछले कई वर्षों से किताबतेरस का आयोजन कर रहा है। पाठकों को राजकमल प्रकाशन समूह के कई आयोजनों का बेसब्री से इंतज़ार रहता है, किताबतेरस उनमें से एक है।

इस बीच जो हमसे बिछड़ गए

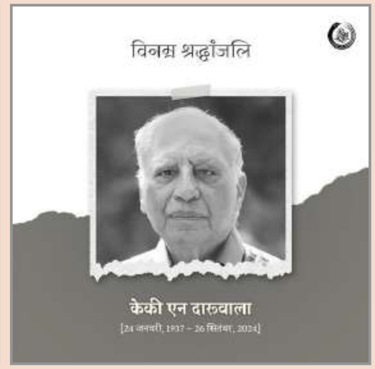

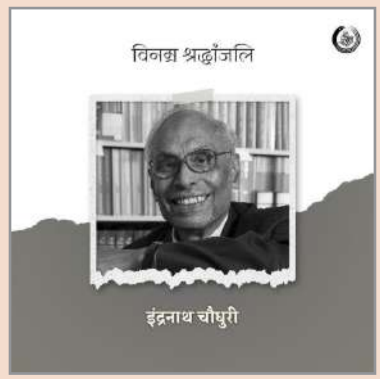

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक अशोक कुमार महेश्वरी ने बी.के. ऑफसेट, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से मुद्रित कराकर
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया।
संपादक : अशोक कुमार महेश्वरी